असुरन ओघ, अमित क्षण बीच प्रहारयो ॥ सम्भाषण सियकीन, अब्धि उल्लङ्घन ठान्यो। उहिं अविभा हनुमान, मान कानन भल भान्यो ॥ जबकामपड़े बड़युद्धको, तितै ताहि भेजत न कित। कछु दूरलेन सन्देश है, तबं तितको प्रेषन्ति नित ११ ॥ रावणउवाच ॥राम सुन्दरीबिरह,बिदित बैठ्यो बपुधारित। तासचिन्तया लब्ध,भयोभल बच्छ बिदारित ॥ बयोवृद्ध सुग्रीव, यथा निर्मूल कूलतरु। कौन बिभीषण गिनत, अतिथि अरिभयो दीनअरु॥ रावण बदन्त अङ्गद सुनहु, और न कोऊ अनेकहै। लङ्कालगाय पावक परम, मोरबध्य कपिएकहै १२॥ अन्योन्यभाषण ॥ कोहै बनपति तनय, कौन बनपति तव संगी। कोसंगी इकदिवस, सप्तसागर कृत अङ्गी ॥ कक्षापुट तुहिंलिये, फिरयो वह बानरबाली। हां जान्यों वह कुशल, कुशल तितकर्म कुचाली ॥ श्रीरामचन्द्र जबरुष्टहै, स्वस्तिमान को रहि सकत। अनरन्यभूप तर्पण करन, रम्य रुधिर तो तनुतकत १३ कहा करतहैं राम, प्रतीपन विजय निरन्तर। किहिप्रतीप जयकियो, बिदितबाली सुदिगन्तर॥ कोबाली का बिसरिगयो, पहिंचान कहा कपि। यहहू बिस्मृति तोर, अहो बड़मोह महानपि। परियङ्क बद्ध दश बदन तू, निज बालक कलकेलिकृत। लत्ता प्रहार ममबिसरिगो, अति अचरज ध्रुवधीय घृत १४॥ अङ्गदउवाच ॥ प्रथम तिरयो दुर्लंघ्य, अम्बुनिधि बानर शावक। दैत्यन बहु दुर्भेद्य,भेदि प्रविश्यो पुरतावक ॥ बनरक्षक उच्छिन्न, भक्षिफल अक्षहननकिय। प्रदहन लङ्कापुरी कियो, अवलोकनहू सिय॥ इतिबिद्यमान दशबदन तव, एक अल्पकपि आचरित। मैं कौनकौन बर्णनकरौं, रामभूप अगणित चरित १५॥ रावणउवाच ॥ रावण करि आक्षेप, उचारत आनन ऐसे। भग्न भान शिवचाप, बालि आहतहत तैसे॥ सप्त तालहत

हतक, बारिनिधि बद्धबद्धकृत । कहापराक्रम राम, अहंकृति करि उर आवृत ॥ धुरधरत शैलमारगधरा, अहिपति अङ्गद शिवलसत । तिनसहित अचल कैलास धृत, बिरहित रुज ममभुज हसत ॥ १६ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित कविटीकारामाङ्गजगोविंदरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गदान्योन्यसंभाषणंनामपंचविंशोल्लासः ॥ २५ ॥

कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ सुनि सुनि रावणके बचन, करि करि कपिपति कोप ॥ स्वामिभक्ति अभिनेय उर, बच उचरत साटोप १ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ करि कक्षागत तोहिं, बालि नामा बल वारो । कपिकुल तिलक सुसत्त, सिन्धु सन्ध्यार्चन सारो ॥ कियो अखिल अविछिन्न, बलिष्ठ न उहिं सम कोऊ । श्रीरघुबर रणधीर, हन्यो इकशर करि सोऊ ॥ सत्यज्ज्य अहंकृति अमितउर, वह बानर सुरपुर गयो । तजिदेउ गर्व यह सर्व तुम, निज हिय अन्दर जो रयो २ जिहिसँदेश हरिदूत, मरुतसुत तिर्यो वारिनिधि । गोपद इव उर आनि, स्वामि किय सब कारजसिधि ॥ निज आलय जिमिआय, प्रवेशन कृत लङ्कापुर । सिय सम्भाषण दर्श, कियो कानन भञ्जन तुर ॥ तव भूरिसैन गञ्जन ससुत, पट्टपत्तन प्रदहन ठयो । किहि भांति राम बर्णनकरौं, प्रभु प्रताप सब क्षितिछयो ३ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ बालि तनय बर बचन सुनि, रावण भयो सक्रोध ॥ अहंकार आरूढ़ ह्वै, उचरन लग्यो अबोध ४ ॥ रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ हन्यो कनकमृग मात्र, तुच्छ तृणचर कानन मधि । प्लवग बृक्षते बृक्ष, करन शाली बाली बधि ॥ बीर कहावतं राम, मोर हियहास होत है । प्रबल पराक्रम पुञ्ज, दशानन जग उदोत है ॥ बहु बह्नि मालज्वाला जटिल, अति दृढ़शर सन्धान है । जिय जबर युद्ध उद्योगयुत, मम समान नहिं आनहैं ५ ॥ अङ्गदउवाच । दोहाछन्द ॥

मोको दूतभयेसते, सन्धी विग्रह होय। अक्षत सक्षत तनु पीठक्षिति, अवलुण्ठनहै तोय ६॥ चन्द्रायणाछन्द॥ रावण जानहु मोहिंदूत श्री राम को। महाबीर रणधीर सुगुणगण ग्राम को॥ खरदूषण मृगभक्षि तृषित शरभूंर है। अरिहां। पित्रहिं कण्ठ घट रन्ध्र रुधिर सुजरूर है ७॥ रावणउवाच। दोहाछन्द॥ रेरेबानर अति अधम, कटुक प्रलापत काहि॥ श्रवणलाय सुनिलीजिये, यहिबिधि रावण आहि ८॥ षट्पदछन्द॥ मृत्यु भृत्य पादांत, तपति दिनकर सुमन्दरुचि। लोकपाल पुनिअष्ट, मोरभय चकित रहत शुचि॥ बन्दतनित पद-रेणु, इन्द्र आदिक निशिबासर। चन्द्रहास ममलखत, गर्भ सब सुर अहितियनर॥ अति उग्रप्रतापी असुरपति, रहत सकल करजोरिकै। अब आये इत तपसी युगल, बानर सैन बटोरिकै ९॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ भूतल ताड़ित पानितल, भुज अस्फालन कीन। अङ्गद होइ सक्रोधवपु, उच्चरत बचन अदीन १०॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ रेरे राक्षसवंश, घोरघातक पातकचय। समर मध्य श्री राम, करहिं तव सकल शीशक्षय॥ दिशा विदिशि परिपूर्ण, निकर नाराचन करिहैं। रघुबर बीर सुधीर, जबै कर बर धनुधरिहैं॥ तब तोर मत्थ भूपर परहिं, गृद्ध्र करहिं लुण्ठित लपटि। समुदाय शिवा कवलित करैं, भखैं काग झुण्डन झपटि ११॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ रावण बदत प्रपञ्चयुत, कटुबादी कपि तोहिं। हौं न हनत इहिहेतु तुहिं, धर्मशीलता मोहिं १२ दूत यथोकत वादि है, नरपति हनत न ताहि। क्रूर कोपकरि करत हैं, बपु बिरूप कछु वाहि १३॥ अङ्गदउवाच॥ परदारा अपहरण मधि, लई न रञ्चक लाज। अबै दूत परित्राण बिच, धर्मशीलता आज १४॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ इन्द्र माल्य करमोर, द्वार प्रतिहार संहसकर। गृह समार्यक वायु

बरुण चुन चन्द्रछत्रधर॥परि निष्टत पांचक्य,परम पावक पटुपाचक। राचक नारद प्रमुख, देवगुरु आदिक याचक॥ मम भवन बिभव लखत न कहा,तवन करत रघुबर महा। वह मनुज मात्र बपु बिदित है, बर राक्षस भक्षण रहा १५॥ अङ्गदउवाच॥ रेरे रावणहीन, दीन कुमती तव दरशात। रामहिं मानत मनुज, पूज्य याचक चय परशत॥ कहां नदी सुरनदी, कहां गज ऐरावत गज। रबि हय है हय कहां, कहां परजापतिहै अज॥ रम्भा कहां अबला कहां,युग गिनती कृतयुग कहां। किलकाम धनुषधारी कहां,का बानर हनुमतमहां॥१६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गदयोरुत्तरप्रत्युत्तरवर्णनंनामषड्विंशोल्लासः॥ २६॥

अथ प्रश्नोत्तर॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ कोतू किहिको सुवन, यहां आयो किहि कारण। बिष्टपाबिजयी पृष्ठ, ताहि तृणसम कियो धारण॥ अङ्गदउवाच॥ बाली तव बलमथन, पुत्र अङ्गद अभिधाना। आयो अचल सुबेल, दूत रघुबर जगजाना॥ बहु बार बार समुझायकै, कहत तोहिं जड़मति अजहु। जानकी देहु जगदीश को, किंवा मस्तकतति तजहु १॥ रावणउवाच। सोरठाछन्द॥ धिक धिक अङ्गदजान, जाने तव मार्यो जनक। बीरवृत्ति निर्मान, दूत होय अरि लजत नहिं २॥ अङ्गदउवाच॥ युक्ति कियो श्रीराम, जानेमम मार्यो जनक। शास्ति त्रिलोकी धाम, कृत्यकाज सुदुरातमन३॥ रावणउवाच॥ राम कहा कृतकाज, यहै चित चाहत चीन्हो॥ उत्तर दिय युवराज, अम्बुनिधि बन्धन कीन्हो॥ रावणउवाच॥ लङ्कानाकनिकाय, वैरि बसती नहिं जानत। अरु अतरल बल मोहिं, मनाकहु नहिं पहिंचानत॥ तब कहि अङ्गद जानत सबै, पै तुम्हरी नहिं बात है। लङ्काधिराज वह बिभीषण, बिदित बीर बिख्यात है ४॥

रावणउवाच॥ बानर बांध्यो सेतु, लखी कौनसी बड़ाई। गिरिसमान बलमीक, पिपीलिक बिरचितपाई॥ लङ्कदही हनुमन्त, याहुमें नहिं अधिकाई। दाहक अग्नि स्वभाव, बिदित जगजन सबठाई॥ आश्चर्य शौर्य निज भुजनको, राम अपर किंचित कियो। युवराज वहै बर्णन करहु, सो सुनिबे हुलसत हियो ५॥ अङ्गदउवाच॥ तिहि तिय निकट नितान्त, थिरीकृततनु चित बिलसी। सिय समान सुखलेन, बहिन रावर हिय हुलसी॥ तिहिकी नासा वसा, खड्ग कीन्हो प्रभु पंकिल। खरदूषण त्रिशिरादि, रुधिर करिकै धोयो किल॥ परियस्त नयन तव दर्प इव, स्वसानाक छेदन कियो। श्रीराम वहीबिसरतकहा, विश्व विदित जिहि यशलियो ६॥ रावणउवाच॥ परिमित महिमा क्षुद्र, तितहु कृत क्षितिधरघटना। तरिकै तुच्छ समुद्र, लगाई अबिरत रटना॥ अकलित महत महत्त्व, दुखद दुष्पार परमहै। विंशतिभुज दशबदन, बिंशती सागर समहै॥ ते अति अगाध जिन थाह नहिं, बृथा परिश्रम करतहौ। सब सिद्ध करहु निज निज निलय, बिना मौत क्यों मरतहौ ७॥ अङ्गदउवाच॥ रे रे रावण असुर, अवनि पर रावण केते। हमने बारम्बार, श्रवणपुट कीन्हे एते॥ कार्त्तवीर्य दोर्दण्ड, चण्ड पिण्डीकृत इक है। दूसरगत दैत्येन्द्र, द्वार दासीदतधिकहै॥ नाचियो नाच गहि कवल तित, तीसर लज्जाजन्य है। इन बीच कहहु तू कौन सो, अथवा इनते अन्य है ८॥ रावणउवाच॥ कुम्भकर्ण मम भ्रात, अखिल अरिकुलसंहारक। कालरूप बिकराल, कलेवर भवभयकारक॥ मेघनाद मम पुत्र, पुरन्दरबन्धनकर्त्ता। चन्द्रहास मम खड्ग, सकल शत्रुन संहर्त्ता॥ ममहैं सहाय निशिचरनिकर, त्रिभुवनबिजयी शत्रु सुर। रावण लसन्त अभिधान मम, राजत राजा लङ्कपुर ९ भयेहुते बलवान, महा कपिपति

हैहयपति । दशकन्धरकी कन्ध, प्रतिष्ठा अब छाई अति ॥ सद्य बिपा-
टित कराठ, कन्दलीकी कसकण करि । अंसस्थलि अवकीर्ण, इभा-
जिन पल्लव निज धरि ॥ धूर्जटी झटिति प्रस्फोटयत, आनन उचरे
धन्य है । सम बाली अर्जुन समयते, अब प्ररूढ़बल अन्य है १०
बक्षस्थली कठोर, मोर संगरभो सुरपति । ऐरावत गजदन्त, मुसल
उन्नत आहत अति ॥ भग्नभयो सुखकरी, हृदय मम तनक न त्रा-
सत । अरु हेला उच्छिप्त, अद्रि कैलास प्रकासत ॥ संत्रस्त अङ्गना-
लिंगने, प्रचुर प्राप्त आनन्द हर । लङ्काधिराज रावण विदित, रिपुन
ओर है अन्यतर ११ ॥ अङ्गदउवाच ॥ रे रावण हरशैल, मथन प्रख्यात
पराक्रम । चहत रामते युद्ध, युक्त नाहिं लखत तोहिं हम ॥ रहनदेउ
रघुराम, लक्षमण कृत धनुरेखा । लंघितभई न तुच्छ, तबहिं तव बल
सब देखा ॥ उन लघु किंकर लंघित जलधि, पुरी दग्ध अरु अक्ष-
हत । रण घनघमण्ड तजि दीजिये, मम बचकीजै शरणगत १२ ॥
रावणउवाच ॥ हिरणकशिपु हिरण्याक्ष, दैत्य ईश्वर भस्माङ्गद । अ-
वर अमरद्धिष सकल, बल कथा तुलित नचाङ्गद ॥ बाहुसार मम
अलं, अलंकृत इन अवलोकत । समता लहत न कोपि, यदपि बहु
बिश्व बिलोकत ॥ जो रामचन्द्र रिपुहा कहत, भयो प्रिया अपहरण
अब । अरु संधिघात करबातहै, जानि लियो इहि बीच सब १३ ॥
अङ्गदउवाच ॥ मत्थन करि मत क्रीड़, कहत कैलास सुभटसुन । शिव
गहि गहि पुनि देत, तथा रामन रावण सुन ॥ अब्धी बन्धन देख,
स्वल्प सरइव सरसायो । कमल बन्धु कुलबधू, छराड चह जो सुख
पायो ॥ हम हितू हेरि हितकी कहत, यामधि न कर अचम्भ है । मम
जनक दिव्य दोर्दण्ड जय, कलित सुकीरति खम्भ है १४ ॥ प्रश्नोत्तर ॥
चन्द्रायणाछन्द ॥ को तू बालीतंनय दूत श्रीरामको । को रघुबर अरु

बानर बाली नामको ॥ बांधि तोहिं चतुसिन्धु मुहूरत मधि भ्रम्यो। हरिहां। वह बाली ममतात हीय ते किमि गम्यो १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ दोर्दण्ड परचण्ड तोर, प्रति हनन प्रबलगति। सहसबाहु भुज सहस, सद्य छेदन कृत भृगुपति ॥ परशुराम गर्वापहारि, श्रीरामदूत हौं। अङ्गद मेरो नाम, पुरन्दर पूत पूतहौं ॥ जब भूरि भ्रमन मूर्च्छित लख्यो, जनक घृणा संयुत भयो। पुच्छाग्र बाल सुनिश्वास दिय, तदपि तुच्छ बिस्मितरयो ॥ १६ ॥

इति श्री.पिपलोदपत्तनाधिपाबरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्री.वरविलासेरावणाङ्गद प्रश्नोत्तरवर्णनंनामसप्तविंशोल्लासः ॥ २७ ॥

रावणउवाच। चन्द्रायणछन्द ॥ बाल तालतरु हने सार्द्ध त्वचतेहुते। जर्जर जीर्ण पिनाक भङ्ग नहिं अद्भुते ॥ हरक्रीड़ाचल कियो कन्दुकी क्रीड़ है। हरिहां। सो सुनि सुनि सब बीर होत सव्रीड़ है १॥ षट्पदछन्द ॥ श्रवण पंथन मधि पांच, शूर आवत मम कतिकति। साम्य शरणि उल्लंघ्य, जगति जागर्ति लङ्कपति ॥ जिहिं दोर्मण्डल गाढ़, परम पीड़न बरबशते। रक्तछटा घनघटा, मनोद्रव धातु दरशते ॥ अंकुरित करत शङ्का अजौं, शंकर गिरि कैलास है। अङ्गद अशेष मम भुजन मधि, प्रबल पराक्रम बास है २ मूरध्रनिज उत्कृत्य, हुताशन हुत जबते अति। स्फुरित नहीं ब्याकीर्ण, भाल लिपि लखि लङ्कापति ॥ होहिं रामते काल, अस्य इति बर्ण बांचि तित। अधिक उमँगि शिर आए, असखलित होय चारुचित ॥ प्रभुफ्दु पिनाकि पीड़ित किंये, गिरा जासु गुणगायते। अस लसत लङ्क नगराधिपति, कवन तास बैरायते ३ इहिं दशमुख बड़बीर, धीर का बर्णन करिये। प्रबल पराक्रम पुञ्ज, प्रचुर धिय धीबर धरिये ॥ पूजन काज पिनाकि, करन चह मंस्तक माला। सूत्रहेत हरकण्ठ,

विकर्षणकृत बर ब्याला ॥ तव भृकुटीकी करि सूचना, प्रमथ गगन प्रतिबेध किय। लङ्केश मानि तिनको कथन, लियो अपरिमित हरष हिय ४॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ इहि अन्तर मधि आइ उत, पढ़त बचन प्रतिहार। सभास्तार संदोह मधि, अधिक उच्च सुरधार ५ प्रतिहारउवाच। षट्पदछन्द ॥ नैष समय अध्ययन, मौन मुख धरहु बिधाता। स्वल्प स्वल्प संजल्प, गुरो जड़मति खलु ख्याता ॥ नाहिं शक्रकी सभा,स्तवनगिर संहर नारद। पूर्ण करहु स्तुति कथा, तुम्बरो गीत बिशारद ॥ भल सीता रच्छक भल्लकरि, भग्न हृदय लङ्केश है। अश्वत्थपत्र इव स्वस्थ नहिं, ब्याकुल बुद्धि बिशेष है ६ ॥ कविरुवाच॥ अङ्गद होय सक्रोध, कहत एरे रावण सुन। तव मत्थन करि करहिं, राम दिग देव बलीचुन ॥ हौंहूँ मारन योग, तदपि तोको नहिं मारत। तात कक्ष अवशिष्ट, बिदित यह बात विचारत ॥ किलक्रीड़ित तवशिर कन्दुकनि, पद प्रहार अगणित किये। निज क्रीड़न की सामग्रि यह, भञ्जन करि लज्जत हिये ७ ॥ सोरठाछन्द ॥ शत योजन बिस्तार, तिमि तिहिं निगलत तिमिंगिल। तिमिंगिल गिलहु निहार, ताहि गिलत राघव बिदित ८ ॥ षट्पदछन्द ॥ अबिरल गल दल गलित, ललित लोहित रत धारा। धौत त्रिलोचन ईश, अंघ्रि अम्बुज बहुबारा ॥ प्राप पिनाकिप्रसाद, मुधाजय महिमा जगमधि। अरु अद्री उद्धरन, गर्व आरूढ़ हस्तअधि ॥ दश मस्तक बिंशति करन को, केवल भार उठानभल। किलकर्त्तन फल बहु शिरन को, भार उद्वहन भुजन फल ९ मुञ्च मुञ्च मैथिली, रामपद्ध पदपङ्कज भज। करहु राज चिरकाल, हविर्भुज होहु अमर त्यज ॥ लङ्कापुरी प्रतच्छ, पराभव पावन जैसे। उर अन्दर निरधारि, काज बर कीजै ऐसे ॥ नातर चपेट बान्नरन की, मुष्टि वृष्टिहू है अमित। अतिक्रूर

कीन कुकरम कठिन, तिन सबको फल मिलहितित १० निरखे नहिं रघुनन्द, प्रथम नहिं सुने श्रवण पथ । कीन्हो क्यों न बिलम्ब, बिपिन बिच हुतो महारथ ॥ थँभ्यो नाहिं क्षणमात्र, मार्ग मधि भग्यो भयातुर । अजों न थिरता गही, हशत उर अतिशय आतुर ॥ अब अखिल मान तजि दीजिये, लियो श्रवण सुनि बालिवध । सीता समर्पि रख बंश निज, दास होहु अधिपति अवध ११ ॥ रावणउवाच । चन्द्रायणाछंन्द ॥ हरिपबि पायप्रहार शोथ कछुहीलियो । उर उदग्र गुरुगगन प्रसभ सब पीलियो ॥ सुरश्रीकरणी काज मोर भुज बनकियो । अरिहां । अङ्गद दशमुख बीर तोहिं बिस्मृतरियो १२ मैंने मेरे हत्थ मत्थ दश छिन्न है । चन्द्रहास असि किये अखिल उच्छिन्न है ॥ गदगद गिर गलिताश्रु नाहिं स्मितवान है । परहां । याके मध्य प्रमान शम्भु भगवान है १३ छिन्धि मोहिं मुहिं छिन्धि छिन्धि मुहिं बोल है । पुनरुद्भूतन निरखि करत हिय तोल है ॥ नव भव आगे इन्हें दशानन काट है । परहां । भूमि पतित शिर हँसन लगे अट्टाट है १४ मूल पञ्चशिर पुष्प रम्य रचना करी । तदुपरि लर दूसरी चार मस्तकधरी ॥ दशम कहा यह शङ्क दशम मस्तक भई । परहां । धर परिकरि कर परसताइ छेदत सई १५ लङ्केश्वर समधीर बीर अतिरम्य है । जिहिके गुणगण गूढ़ गिरादि अगम्य है ॥ मत्थ होमि लखि अनल मन्द शिख भीति है । परहां । श्वासानल सन्दीप्त कियो युत प्रीति है १६ ॥ अङ्गदउवाच । षट्पदछन्द ॥ बिक्रम मस्तक होम, कथा पौलस्त्य बहुत किय । सारो अङ्ग जलाय, देत वैधव्य भीति तिय ॥ अरु शिवगिरि उद्धरन, पराक्रम तुमहिय हेरे । रासभखर उष्ट्रादि, भारबाहक बहुतेरे ॥ कछु अपर परम पुरुषार्थ कृत, होय वहै बर्णनकरौ । बहु बार बार बिस्तार किय, अब यह

प्रकरण परिहरौ १७ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ बिदित बीस चष अन्ध, विंशति श्रवणन करि बधिर। चहन सन्धि सम्बन्ध, अङ्गद उर ऐसे तुली १८ स्वामी शौर्य सुनाय, पुनि अङ्गद चलिबो चहत। उचरत शीश धुनाय, बालिसुवन दशशीश सों १९ ॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द ॥ अर्जुन नृप तुहिं बद्ध, बिदित कारागृह अन्दर। मुनि पुलस्त्य तवहेतु, भये याचक जिहि मन्दर॥ तिहि भुजबन उच्छिन्न, कार अन्तक क्षत्रिय कुल। परशुराम प्रख्यात, पराक्रम बहुबल संकुल ॥ श्रीराम तेज बड़वागिकृत, शौर्य-सिन्धु तस किय चु-लक। लङ्केश तोर बल तुच्छ सर, द्रुत सूखहि लङ्का मुलक २० रेरे राक्षसराज, मुंच सहसा बैदेही। धर्मपत्नि श्रीरामचन्द्र, सत्वर बे-देही ॥ मिथ्या निज पुरुषार्थ, प्रचुर प्रागल्भ्य रखत उर। बानर भट वाहिनी, भयंकर भाषत तवपुर ॥ इमिकहि कहि अति उतकट बचन, आतङ्कित लङ्काकरी। निष्क्रान्त भयो युवराज द्रुत, कछु दशमुख श्रवणन धरी ॥ २१॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणाङ्गद संवादोनामाष्टविंशोल्लासः ॥ २८ ॥

अथ हनुमन्नाटकेऽष्टमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ निज प्रताप परचण्ड, चण्ड समर उत्साह करि। परिपूरण दोर्दण्ड, बिलसत पुर लङ्कापती १ ॥ षट्पदछन्द ॥ मुनिकै दशरथसुवन, सुबेलाचल कट-कोपर। रावण रण उद्योग, अमित उत्सव निज उरधर ॥ दशकर धनुटंकार, ककुभ परिपूरण कीन्ही। बहुरि शिलासित बिपुल, बिमल बिशिखावलि लीन्ही ॥ अघशिष्टरहे दशहत्थतस, तिनकरि चित्रा-कृति करन। अभ्यशत अङ्गना कुचनपर, पत्रवल्लि रचना धरन २ तदनन्तर लङ्केश, राजमन्दिर शिखरस्थित। मञ्चोपरि आरुह्य,

लखत बानरबाहिनि जित ॥ यह बानर दग्धाग्र, पुच्छ लङ्काविकृती कृत। यहै बालिसुत विदित, तस्य आकृति इव बपुधृत ॥ शरधनुष धारि कामाकृती, श्याम होहिं सीतापती। प्रत्येक शत्रु अवलोकि उत, मञ्चस्थित उचरत अती ३ तस तिय मन्दोदरी, परमसुन्दरी बखानत। निशिचर बन स्वच्छन्द, दवानल राघव मानत ॥ पुनि निज पतिको परम, प्रेम सिय प्रति पहिंचानत। चहत विजय निज पक्ष, अजय प्रतिपक्ष प्रमानत ॥ वह कबहुँक गृह संचारकृत, कबहुँक पति ढिग प्रापहौं। क्षण पावत नहिं एकत्रथिति, अन्तरा-लगत आपहौं ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ बृन्दारक बन्दारुबृन्द अभि-बन्दिते। अतिसुन्दर मन्दार माल मकरन्दिते ॥ मन्दिर मन्दिर मध्य म्लानता मञ्जिते। परहां। मन्दोदरि चरणारबिन्द रजरञ्जिते ५ ॥ दोहाछन्द ॥ रिपुबिद्रावण रावणहि, करि करि बहुरि निहोरि। मन्दोदरि अति सुन्दरी, कह अञ्जलिपुट जोरि ६ ॥ मन्दोदर्युवाच। षट्पदछन्द ॥ शशिशेखर गिरि आप, बाहु उद्धृत जगजान्यो। कुम्भकरण निज भ्रात, जगतभक्षक उर आन्यो ॥ बासवबिजयी बिदित, सुवन घन-नाद तिहारो। तदपि बालिजित बली, राम रणधीर निहारो ॥ इहिं अबला छल बल करि हरी, नाथ जानकी दीजिये। निज मन्दिर मधि मन्दोदरी, रहसि बिनय सुनि लीजिये ७ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ मन्दोदरिके बचन सुनि, सुललित लङ्कानाथ। निज भुज आडम्बर किये, बचन बदत दशमाथ ८ ॥ षट्पदछन्द। रावणउवाच ॥ भामिनि क्यों भय करत, भीरु बहु निशिचरनायक। नशिहैं रिपु मम महत, लेखपति नहिं रणनायक ॥ धर्न मार्गनगण प्राण, हरहिं हेरहु तपसी के। जानहु नाहिं बिलम्ब, लम्ब निज उरमधि नीके ॥ सुनि स्वामि बचन बाक्षल सहित, भई सभय मन्दोदरी। कहि पाप

अमङ्गल शान्तहै, पुनि आनन गिरि उच्चरी ९ एक भृत्य सुग्रीव,
प्रथम कपि इतमें आयो । बन बनपालक भञ्जि, अक्ष हति नगर
जरायो ॥ चल्यो गयो चुपचाप, लखि रहे बीरबर्ग सब। किहिते कछु-
हुन बनी, सकल हे बिद्यमान तब ॥ अब इत आयो कपिबल प्रबल,
उल्लंघन जलनिधि कियो । वे इच्छत उर नहिं आन कछु, चाहत
मैथिलि लियो १० ॥ कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ सुनि मन्दो-
दरि कथन सभय रावण भयो । शुक शारण द्वै दूत पठावन मन
ठयो ॥ रामदेव के शिबिर जाउ आयसु दई ।-परहां । पुनि निज
मन्त्रिन सहित स्वहित चिन्तत सई ११ ॥ विरूपाक्षउवाच ॥ षट्पदछन्द ॥
बिरूपाक्ष बर सचिव, सुहित बच उचरत ऐसे । संप्रति प्रतिभट उ-
परि, नाहिं प्रोल्लासनजैसे ॥ सीतारक्षण दक्ष, लक्षमण कृत धनुरेखा ।
नाहिं उलंघी गई, भई बिस्मयप्रद लेखा ॥ कपिकटक सहित लङ्घित
जलधि, राजन राम महानहै । उन बैदेही बैदेहि द्रुत, यामहँ कछु नहिं
हानहै १२ जबलौं नाहिं निहारं, राम दशरथ नृप नन्दन । जबलौं
नाहिं निहार, नयन पाथोनिधि बन्धन ॥ जबलौं नाहिं निहार, निर-
स्तालक लङ्कापुर । कुलाङ्गारता प्राप्त, अनुज सुचरित पबित्रउर ॥
तबलौं बिचारि असुराधिपति, अनघा सीता अर्पिये । इत होय न
कोणप कुलकदन, यहि बिधि अरि सन्तर्पिये १३ ॥ रावणउवाच ॥
ये एते ममबाहु, शक्र दोर्दण्ड कण्डुहर । सोहं लङ्कानाथ, सकल
संसार बिजयकर ॥ बांध्यो बानरसेतु, हमहुँ श्रवणन सुनिलीन्हो ।
देखतहो निजनयन, लङ्कगढ़ आवृत कीन्हो ॥ जो जन जीवतहै
जगत मधि, कहा न देखत सुनतहै । ध्रुव धैर्य्य बीर्य्ययुत होय सो,
तितु चित अबिचल चुनत है १४ बिरूपाक्ष पुनि पठत, शक्र शिर
पर प्रभु आयसु । सकल शस्त्रधर मत्थ, रहत रावरी रजायसु ॥

भक्ति भूतपति शम्भु,रहन लङ्कापुर आस्पद। द्रुहिणान्वयसम्भूति, एकते अधिक एकहद ॥ दुर्लभ हरेक इन गुणन में, सब जनको सर्वत्र है.। विलसत अशेषहु आयकै, आप बीच एकत्र है ॥१५॥

इति श्रीवरविलासेरावणविरूपाक्षसंवादेएकोनत्रिंशोल्लासः ॥ २९ ॥

रावणउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पण्डित मन्त्री शुद्ध बुद्धि बिलसन्त है। बिलासीन को रती सचिव सुलसन्त है ॥ मानो मनुज महान पराक्रमसार है। परहां। तिनको मन्त्री महद एक असिधार है १॥ कविरुवाच ॥ मन्त्रि महोदर असिध उच्चरत यों तबै। मुख सुख मधुरी बीच लगत प्यारी सबै ॥ व्यासनाधीन धरेश धीय उद्योत है। परहां। तित निषेध के बचन सुदुख सह होतहै २प्रियारु मधुरावाच सदन मधि स्वच्छ है। कर्कश सुनय समेत बचन श्रीरच्छ है ॥ प्रियबादी थिति बिभव सुभोजन दान में। परहां। साधु बादि नर रहे बिपतिके थान में ३ जिहिं नियरायो निधन मूकता गुणमहा। तदपि भक्तप्रभु मुखर होयके हमकहा॥ब्यसन पंकमधि मग्न स्वामि को करतहै। परहां। ह्वैन फेर उद्धरन मूकपन धरतहै ४ नटी पूरखल प्रीति लक्ष्मी लेखिये। बिन कारण द्वेषीन नियति पुनि पेखिये ॥ अरु बनिता सुकुमार उरसि आनो अबै। परहां। अस्थिर यौवन जगति आप जानहु सबै ५ दत्तेच्छाह अकार्य मध्यहू जेरहैं। ठकुरसुहाती बात सकल सन्तत कहैं ॥ चित्त गृहन मधि चतुर बिदग्ध बखानिये। परहं। मधुकर इव कर्णान्त महीपति मानिये६ दिनमधि पद्मनि प्रभा कुमुद्वति रैनहै। सन्तत रहत न चैन तथैव अचैन है॥ क्रमकरि सम्पद बिपद सबहुको प्राप है। परहां। यह उर अन्दर अवशि आनिये आप है ७ नीति शास्त्र यह त्रिविध धीय ध्रुवधार्य है। बर्णन किय गुर्बादि अखिल आचार्य है ॥ यहां सुखद

है एक द्वितिय परलोक है । परहां । उभय लोकमधि तृतिय घना-
नँद ओक है ८ अतिउत्तम उभयत्र सुखद उर आंनिये । पुनि उत्तम
परलोक मोदप्रद मानिये ॥ अधमाधम आनन्द प्रदायक अत्र है ।
परहां । तिहिते कारज सरत नाहिं कछु तत्र है९ स्वामिनिधनकरि
सचिव शस्त्रबिष आदिते । अरु अपनो प्रिय परम करत राज्यादि ते ॥
वहहै ऐहिक शास्त्र पाप सब मूरहै । परहां । तिहिं सुखपर बहुबार
डारिये धूरहै १० निगम मार्ग उच्छिन्न करत जो पाप है । आज्ञा
भङ्ग महीप किये सो प्राप है ॥ ताके बध मधि लहत जु कलुष अपार
है । परहां । द्विसह सहसनाशेष पावत न पार है ११ बिन अपराध
प्रधान प्रभू पीड़ितकरैं । तनक न तिहिं बैरूप्य कदा धियमें धरैं ॥
वह आमुष्मिक शास्त्र सुखद परलोक है । परहां । उत्तम उहिं उच-
रन्त बिदुष अवलोक है १२ राज्य ग्रहण सामर्थ्य सचिव मधि है
सही । तदपि स्वामि बध कदा मनहुं मानै नहीं ॥ वह आमुष्मिक ऐ-
हिक बचन उचारिये । परहां । उत्तम उत्तम वहै धूव धिय धारिये १३
शुक शारण तब सचिव युगल ऐहिक कहे । गत बानर बपुधारि
अजौं तितही रहे ॥ आमुष्मिक बिरूपाक्षि महोदर दोयहैं । परहां ।
सीय समर्पहु नतर संगचर होय हैं ॥ १४ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालराॅवतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमहोदरमन्त्रीवाक्य
वर्णनंनामत्रिंशोल्लासः ॥ ३० ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ रावण मय शिरकम्पसह, करत स्वबुद्धि
बिचार । नीति शास्त्र निज श्रवण सुनि, शोधत सारासार १ ॥
रावणान्तर्गतबिचार ॥ कुम्भकर्ण भ्राताबली, राजलोभ मनलाइ ॥ जो
कदापि यह मुहिं हनै, पहिले पठवौं याइ २ ॥ कविरुवाच ॥ बिरूपाक्ष
अरु महोदर, बिभु अन्तरगत भाव । जानि लियो शिरकंप करि,

पुनि पठ सचिव सुभाव ३॥ विरूपाक्षमहोदरवचतुः॥ बदत धर्म नित नीति बिद, केवल नरपति अग्र। युवराजादिकके निकट, न कह कदापि समग्र ४॥ षट्पदछन्द॥ हा लङ्केश्वर नाथ, शुद्ध अधिकारी हम हैं॥ किय शङ्का अंकुरित; कहा वैरूप्य विषम है॥ नाहिं सर्पमुख रक्त, लखत नहिं दुष्ट कलेवर। तथा न धननृप निकट, न पुनि बित रहत प्रजाकर॥ बहु द्रव्य दुरधिकारी सदन, ते निजपति प्रति द्वेषकृत। हो स्वामि आपनहिं मूढ़धी, नाहिं उभय हम दुष्ट भृत ५॥ चन्द्रायणछन्द॥ दुष्ट सचिव कर अर्पि राज सब भार है। महिपति रहत प्रमत्त सुस्वैर बिहार है। जिमि बिडाल के अग्र राखि पयपात्र है। परहां। सोवतते नृप मूढ़ सुसंशय नात्र है ६॥ षट्पदछन्द॥ किये अवनि उतखान, तिन्हैं रोपत औरै थल। कुसुमित तरु सम चुनत, क्षुद्र लघु बर्द्धत नित भल॥ बाहर कृत कण्टकी, सुतर संहत बिश्लेषत। नम्र करत अत्युच्च, नीच द्रुम उच्चसतत कृत॥ जिमिमाली तिमि महिपालहू, करत रहत चित चिन्तवन। वह चतुर चक्र चूड़ामणी, नृप पावत आनन्द घन ७॥ दोहाछन्द॥ संग्रह करत अशुद्धहू, यद्यपि महिपति शुद्ध। कछु कारज बश होयकै, मदत प्रदाइ बिरुद्ध ८ कचित प्रयोजन हीनहू, देत प्रयोजन पूर। इत प्रमाण निज इष्टसुर, शङ्कर जान जरूर ९॥ षट्पदछन्द॥ सकल सुशक्ति समेत, सदा शङ्कर समलंकृत। यदपि जीर्ण किय जहर, तदपि मस्तक सुधांशुधृत॥ किया भस्म कन्दर्प, तदपि गिरितनया धारत। सुरसरिता शिर धारि, भाल दृग अनल दबावत॥ नित नृपति नीति मधि निपुण शिव, संतत तव रक्षाकरौ। जग बिदित बिरोधी बस्तु बहु, काज निरखि संग्रह धरौ १० दिपत दिगम्बर देव, धनुष धारण किहि कारण। धरौ शस्त्र जो हस्त, क्यों न किय भस्म निवारण॥ धरौ

भासित तौकाहि,अंगना रखत निरन्तर। रखी प्रिया तो काहि, काम ते द्वेष करतहर ॥ अन्योन्य बिरोधी कर्म मधि; निरतनिरखि निज नाथको। बपु अस्ति शेष भृङ्गी भयो, गावत स्वामी गाथको ११॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ नृप दुर्योधन नाम भविष्यति अग्र है। ब्राह्मण मन्त्री बीर द्रोण सुउदग्र है॥तिहिंके बचन उलंघि वहै भविता यथा॥परहां। नाहिं निशाचर नाथ हूजियो तुम तथा १२॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ इमि कहिकै मन्त्री निखिल,निज निज गये निवास। रावण मन्दोदरि सहित, बितरत बिपुल बिलास १३ कीन्हो गवन अशोकवन, बसत जानकी यत्र। रावणसों मन्दोदरी,कहन लगी कछु तत्र १४॥ मन्दोदरिउवाच ॥ मम अरु मैथिलि बपुष बिच, भासत कितनो भेद। सो निज बुद्धि बिचार करि, उचरहु आप अखेद १५ ॥ रावणउवाच ॥ बरवैछन्द ॥ तव तनु गंध मनोरम मीन समान। परिमल सीय कलेवर कमल प्रमान १६ बिलग न मानहु प्यारी मम सुनि बैन। रूप अनूपम उभय न कछु भिद हैन १७॥ शब्दालंकारेयमकालंकारः ॥ सीता धर्मधुरीणारामन योग। सीता धर्मधुरीणारामन योग १८ ॥ कविरुवाच ॥ मन्दोदरि सब सुनिके रावण बोल। करनलगी निज जिय मधि लङ्का तोल १९॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ पाप कथा मधि मगन बिभीषण भ्रात है। कुम्भकरण प्रस्वाप बीच दिनरात है ॥ अभिमानी असुरेश निमग्न कलङ्कमें। परहां। लङ्का डूबत हाय अपरमित कम्प में २०॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ तदनन्तर तिहि ठौरते, भये सकल निष्क्रान्त। ठांह ठांह बरणन करत, असंभवित बृत्तान्त ॥ २१ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामात्मज गोविन्दरामविरचितेश्रीवरबिलासेमन्त्रिवाक्यंनामैकत्रिंशोल्लासः ॥ ३१ ॥

अत्रहनुमन्नाटकेनवमोऽङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ तदनन्तर लंकेश, सानुचर मन्दिर सुन्दर। करि प्रवेश उचरत, उई इच्छा उर

अन्दर॥ भौ अनुजीवी मोर, अखिल सुनि लेउ बचन मम। माया रचन प्रपञ्च, कियो चांहत है चित हम॥ मन रुचै देव सो कीजिये, इमि असुरन उत्तर दियो। सो सुनि सुख सरसावन लग्यो, रावण हरषावन हियो १ तक्षण रजनिचरेश, राम सौमित्री मथदुइ। माया बिरचित किये, रूप ललिताइ परतचुइ॥ गलद बिरलरतधार, प्रेत परिग्रस्त नयनवर। जनकनन्दिनी निकट, कटिति धर कटे अग्रधर॥ शिर युगल जोय युगभ्रात के, सजल नयन हुव जानकी। सुधिरई कछू न सयानकी, बिसरिगई गतिप्रानकी २ अहह निमी नरनाथ, नन्दिनी गदगद बयनी। चुवत चारु चषनीर, फुल्ल नवनीरजनयनी॥ स्वामिमरण भयभीत, उच्चरत आनन सीता। हृदय दहन नहिं दहत, मृत्युनापिच नहिं नीता॥ हा राम रमण संकट शमन, हा लक्ष्मण यहका भई। अतिशूरबीरता धीरता, रावर सब कितको गई ३॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ रामचन्द्र शिर कमल ढिग, बहुबिधि करत बिलाप। हा प्रभु पीतम हा रमण, बिश्वबीर बर आप ४॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द॥ सुललित सरयू नीर, तीर बानार कुञ्जमह। कामकेलि कमनीय, मध्यबर बदत बचन वह॥ सुमधुर अधरमदीय, पान पीयूषभणततित। भयोशीर्ण परिपूर्ण, गयो सब उहिं प्रभावकित॥ जिमि अम्बर बिनशत अर्कतम, तिमिकरिये अरिगणहनन। मम देखि देखि अति दुर्दशा, मनमधि कछु कीजै मनन ५॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ शिर बिलोकि सिय उर बिरह, शोक मोह अरु कोह। प्रेमाकुल व्याकुल व्यथित, दुसह दुःख सन्दोह ६ रावण मधुरालाप करि, देत बिपुल बिश्वास। तिन्हें सीप्रतनकन सुनत, रही न जीवन आस ७॥ सीतोवाच। षट्पदछन्द॥ चहत प्राण परित्याग, कहत करुणामय बचना। पीतम प्यारे प्राण,

नाथ कैसी यह रचना ॥ उत्तर क्यों नहिं देत, बदन बारिज मधु-
बानी। नयन निहारत नाहिं, कहा मोको न पिछानी ॥ बर बिबुध
बधू बल्लभभये, बिसरिगये सुधि मोरसब। आलिंगि मत्थ हंसा
उड़हिं, इहि अवसर अविलम्ब अब ८ ॥ कविरुवाच ॥ इमि कहि
मस्तक कमल, जबै आलिङ्गन लागी। गगन गिरा गम्भीर, भई
करुणारस पागी ॥ नखलु नखलु यह सीय, राम भूपाल मुकुटमणि।
समर शिरसि नहिं बध्य, तोरप्रिय कदा काहुक्षणि ॥ मतपरसमात
इहिं माथ को, धारहु धिय निरधार है। हाहर हर हर हरभक्त को,
यह माया अवतार है ९ ॥ कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ अस अकाश
बाणी सुनत, रावण युत युग मत्थ। करि अम्बर उत्पतन द्रुत, किय
निष्क्रमण अकृत्थ १० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ संयुत लज्जा हर्ष भई
तब जानकी। इक शरमा राक्षसी पियारी प्रानकी ॥ तासों बू-
झति सीय यहै अद्भुत कहा। परहां। प्रत्युत्तर वह देत होय सक-
रुण महा ११ ॥ शरमोवाच । दोहाछन्द ॥ तू नहिं जानत जानकी,
रावण माया ख्यात। भयजिन आनहु भामिनी, जीवत रामस-
भ्रात १२ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ काहल मर्दल आदि कुलाहल होत
है। सज्ज तुरङ्ग महेशननाद उदोतहै ॥ आकर्णय आकर्ण बिलो-
चनि बार्त्त है। परहां। राम समागम शोर निशाचर आर्त्त है १३ ॥
षट्पदछन्द ॥ बिरम बिरम कोपते, कहा अपमान बिचारत। रावण
सतनय बन्धु, बिमर्दन रघुबर धारत ॥ इन्द्रनीलमणि नील, राम
कोमल इन्दीबर। करिहैं त्वदधरपान, कोमलाङ्गी जु निरन्तर ॥
सुनि शरमा के बर बचन इमि, जियजानी पिय जियत है।
तनु बिरह ताप मेट्यो सबै, लज्जित हिय क्षण कियतहै १४ ॥
कविरुवाच । दोहाछन्द ॥ पहिले लखि तस्यान्तमच, कढ़ें न पापी

मान । अभिप्राय यह आनि उर, मैथिलि लज्जावान ॥ १५ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजी विज्ञापितकविटीका रामाङ्कजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेमायामस्तक निर्माणंनामद्वात्रिंशोल्लासः ॥ ३२ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ भिन्नमार नाराच भयो असुरेश है । पुनि अशोकबाटिका कियो परवेश हैं ॥ परिवृत्त सुरसुन्दरी अमित सन्दोह है । हरिहां । हिय विकार सिय करन महामन मोह है १ ॥ रावणउवाच । षट्पदछन्द ॥ असमत चण्ड चपेट, घात स्वर्दन्ति पतित है । कुम्भस्थल अतिथूल, रक्त मुतियततिततहै ॥ तिनकरि अचित अंघ्रि, उरस्थल अविरत इनके । तव पदपंकज निकट, नमत अलिनी शिर जिनके ॥ जानकी अद्य अवलोकिये, भामिनि भाग्यावलि भली । इकसंग अहो इतआपकी, सतीचरित बल्लीफली २ लख मैथिलि मम मत्थ, इन्हैं शङ्कर शिरधारे । पद संश्रिततें भये, अबै इतआइ तिहारे ॥ कहा अवज्ञा करत, ररत करभोरु विनय सच । सुनि सुनि सभय सकोप, भई परतिय लम्पट बच ॥ वैदेहि बदतरे मन्दमति, शिवोत्तीर्ण निर्माल्य सब । धिकतोहिं तोर आननन धिक, हे अतिशय अस्पृश्य अब ३ ॥ कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ सिय साध्वी सुन्दर वचन, अक्षर अलप अमोल ॥ रक्षाकरि हेरावरी, टारहि बिघन अतोल ४ ॥ रावणउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ हूहे भोरम्भोरु त्रिदश मुखम्लान हैं । स्थाता स्वामि राम न सङ्गरथान है ॥ सैना शाखामृगी विपद पुनि प्राप है । परहां । षष्ठाक्षर परलोपि अर्थ थिर थाप है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ काहि अवज्ञा करत, यहै दशमुख तव पद-नत । जबै किये शिरछेद, तबै भोपति इमि उचरत ॥ रेरेरे लङ्केश, छेदि हमको शंकरते । मत मांगहु बरदान, न कछूहै मङ्गन् नरते ॥ अरु हरहूते ऐसी कही, गुहसोयन जिन देउ वर । जउतउ

सक्रुद्ध शिरधरे, शिव इहिविधि रावण असुरवर ६ राम अर्द्ध चित सीय, अर्द्ध चितरावण अन्दर। आधे मैं बिरहागि, अर्द्ध रोषानल मन्दर॥ शीत दाहहै एक, अपर अति उष्णदाह है। दग्ध करेजा भयो, जानकी तोर नाह है॥ अब तास आश उर छंडिये, मोमधि मानस मण्डिये। जिन देह दुसह दुख दंडिये, हिय दृढ़ हठ खलु खण्डिये ७ मुग्धे मैथिलि चन्द्रबिम्ब,सुन्दरमुखि सीते। औषध प्राण प्रयाण, प्राणरख प्राणपिरीते॥ मन्मथ नदी मृगाक्षि, असुन ईश्वरी रक्ष अब। मुञ्च मुञ्च मुञ्चाशु, उरस्थित यह आग्रह सब॥ वह मनुज राज्य करि रहित नर, रामचन्द्रहै एकमुख। हौं असुरनाथ निज थान थित, इत गहि है दशबदनसुख ८॥ जानक्युवाच॥ चुपरहु चुपरहु असुर, मुधा जल्पित नहिं कीजै। मेरे निश्चय बचन, बीस श्रवणन सुनिलीजै॥ उत्पल श्यामल कान्ति, रामभुज भिरहिं कण्ठमम। बिंशति पाणि कृपाण, करहिं कृन्तन निर्दयतम॥ इन उभय बातते तीसरी, तीनकाल मधिहोहिना। बड़ विंशति गल्ल बजाइ कै, बचन सुनावहु मोहिना ९॥ दोहाछन्द॥ मोर निरन्तर ध्यानधरि, राम लियो मद्रूप। तैसे तवकुल कदनको, ममनिरखहि तद्रूप १०॥ कविरुवाच॥ रावण भो निष्क्रान्त तब, सुनि बैदेही बैन। निज मन्दिर अन्दर गयो, चढ़त न कित चित चैन ११ कछुक समय तित थितरह्यो, पै न चैन मनरञ्च। पुनिसिय ढिग जावन निमित, बिरचत महा प्रपञ्च १२॥ षट्पदछन्द॥ नाना बादित बजत, तुरँग स्यंदन गज गज्जत। कपि भटकटक सु भुजास्फाल कोलाहल छज्जत॥ रघुवर बिजय बजाय, कियो पूरित लङ्कापुर॥ रामरूप गहि बनअशोक, प्रति गयो उमँगि उर। लिय पञ्च पञ्च शिरकर युगल, निशिचरपति के पकरिकच॥ जानकी हेरि

हरषित भई, मानि मनसि निज स्वामि सच १३ ॥चन्द्रायणाछन्द॥ लङ्का भट रघुनाथ बेषवर धरिलियो। जनकात्मजा समीप गौन तूरन कियो॥ नामलेत व्यभिचार हीय जिहिं हटतहै। परहां। रूपधारि रघुबीर कि दुर्घट घटत है १४ निरखि निरखि निमि नृपति नन्दिनी नैन है। रघुनन्दन बरबेष बिराजत ऐनहै॥ भामिनि भय तजिभई सहर्षित हीय है। अरिहां। रुचि करि तासु समीप गई शुचि सीयहै १५ ॥ षट्पदछन्द ॥ निरखि राम साक्षात, झटिति कुचतटी भारनत। तदपि तूर्ण उत्थाय, अग्रचलि गई सीय तित॥ प्राणनाथ हौं धन्य, रजनिचर मस्तक तजिये। शान्त होय बिरहागि, गाढ़ आलिंगन सजिये॥ इमि मिलि न मनोरथ मैथिली, करन चही किंचित जबै। वह रामवेषधारी असुर, भयो क्लीब तत्क्षण तबै १६ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सीतासती समीप निशाचर खण्ड है। सत्वर भयो बिशीर्ण जासु मणिदण्ड है॥ इच्छामात्र करन्त यहै फल पापहै। परहां। शिव शिव अन्तर्द्धान असुरपति आप है १७॥ कविरुवाच ॥ कह शरमा जानकी यहै नहिं रामरी। रावण असुराधीश सुमाया ग्रामरी॥ सीय भई सबिषाद उचारत बैन है। परहां। परि है किमि पहिंचान सु नीरजनैन है १८ ॥ जानक्युवाच ॥ हा हाहा आकाश धरणि हा बरुण है। हाहा वायो अर्क करहु मम करुणहै॥ रहिहै कौनप्रकार आत्मगत धर्म है। परहां। परिहै किमि पहिंचान प्राणप्रिय पर्म है १९ ॥ कविरुवाच ॥ तब बाणी आकाश अमल ऐसीभई। चतुरशिरोमणि सीय सिन्दाणी यह सई॥ राम सराहत राक्षसेंद्र रण सोयहै। परहां। चुम्बहि मन्दोदरी ताहि अति रोयहै २० तब परि है पहिंचान सिये तव पीय की। शमन होयगी दुसह दुःखतति हीय की॥ ऐसे सिय समझाय गगन गिर चुपरई।

परहां। मैथिलि मानस मध्य सकज्ञ दुबिधा गई २१ ॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ रावण निजकेली सदन, थितहुइ करत विचार। मया प्राप्त रामत्व पुनि, कियतस चरित प्रचार २२ ॥ रावणउवाच ॥ पापमूल प्रवृती बिदित, निपट निरुन्धन कीन। कौन समयमधि क्लीबपन, दुष्ट दुसह दुखदीन २३ ॥ षट्पदछन्द ॥ जनस्थान मधि भ्रान्त, कनक मृगतृष्णा हतधिय। बचन सो बैदेहीति, साश्रु प्रतिपद प्रलपित किय ॥ कीन्हों लंकाभर्तृ, बदन परिपाटी घटना। मया प्राप्त रामत्व, कुशल वसु तासु निकटना ॥ इहि मध्य श्लेपत्रय चीनहै, प्रथम कीनरावण रचन। पुनि द्वितिय राम प्रबचन पठत, तृतिय काहु भिक्षुक बचन ॥ २४ ॥

इतिश्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्री दूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारमाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरविलासेरावणप्रपञ्चोनामत्रयस्त्रिंशोल्लासः ॥ ३३ ॥

अत्रश्रीहनुमन्नाटकेदशमोङ्कः ॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ गिरि सुबेल थित कटक, बीच रघुराज बिराजत। सहित भ्रात सुग्रीव, बिभीषण युत छवि छाजत ॥ लङ्काधिप प्रतिजाय, जबै अङ्गद उतआयो। विभु बल्लभ बैदेहि, वाहि निज निकट बिठायो। युवराज दूत बर्णनकरहु, है संधी उपकारिणी। दशग्रीव निकट तुम्हरी गिरा, भइ अथवानुपकारिणी १ ॥ अङ्गदउवाच ॥ अङ्गदयुग करजोरि, अरज कीन्हीं यहि रीती। अनुपकारिणी भइ, पुलस्त्य पोते परतीती ॥ उदाहरण हरिणाङ्क, भाल तिहि गुरु भव भाषत। उक्षारथ अरु अस्थि, माल भूषण परकाशत ॥ अरु अङ्गराग भल भस्म जिहि, लसतबस्त्र गजचर्म है। एकालयस्थ धनपति सखा, जस गुरु तस शिव धर्म है २ ॥ कविरुवाच ॥ सुनि बिहँसे रघुनन्द, हुकम पुनि ताहि सुनायो। भो अङ्गद युवराज, समरबर अवसर आयो ॥ सब सैनिक सुग्रीव,

दीजिये आयसु ऐसे। रहैं शर्बरी बीच, सकल सावध हुइ जैसे॥ पुनि प्रात प्रभाकरके उदय, संगर उत्सवहै महा। तब कहि तथास्तु तारातनय, कपिन कपिन कपिवरकहा ३ सरस शर्बरी समय, राम लक्ष्मण दोइ भ्राता। कियो कटकमधि शयन, तहां त्रिभुवनजन-त्राता॥ रावण पठई प्रबल, प्रभञ्जनि नाम एकसी। आई छलबल सकल, छकी मद अछक छाकसी॥ निर्भरशयान लखि राम को, तत्क्षण छुरिका करलई। गुरुभ्रमण सुदर्शन चक्र लखि, चकित-बराकी तकिरई ४॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ तिहि अवसर प्रतिबुद्ध सु अङ्गदवीरहै। प्रभञ्जनी अधिगम्य सुअधिक अधीर है॥ पुन-र्गंतुमुद्यता गर्वगति गोपहै। परहां। तब अङ्गद उचरत बचन साटोप है ५॥ अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ तिष्ठतिष्ठ निशिचरी, क्षणक रहिजाउ अत्र है। फिरि जावहु निज स्वामि, असुर अधिपाल यत्र है॥ आई अङ्गदबाहु,पाशमधि आक्रन्दत अब। हरिणी सिंहाधीन,तासको है त्राताब॥ इमि कहि उहिं अभिमर्दनकियो, भैरवरव चिकार किय। सो सुनत सकलकपि कटकके,जागिउठे अकुलायहिय ६॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ अकूपार इव पार यामिनी पायकै। प्रात होत कबि-ब्रात चले सब धायकै॥ दोर्दण्ड आस्फाल केलि अभिनीय है। अरिहां। उतपाटित साटोप शैल कमनीय है ७॥ दोहाछन्द॥ गिरिवर तरुवर धारिकर, करि कोलाहल चण्ड। लङ्का कीन्हीं आकुलित, बानर ओघ उदण्ड ८॥ चन्द्रायणाछन्द॥ लङ्कामधि लङ्केश उदय रविहोतही। सुनिबानर बाहिनी कुत्राहल श्रोतही॥ अमरष मूर्च्छित होय सुभट बुलवायहै। परहां। दीन्हों उतकट कटक झटिति पठवायहै ९ लङ्काचल शुभशिखर मञ्चथित आप है। मन्त्रि-महोदर पुरोभाग महि थाप है॥ रघुवर बरबाहिनी बिलोकत मानहै।

परहां । महिमा महद महान करत अनुमान है १० जलनिधि खेलत हुते इतै बानर सबै । यातुधान की फौज उतै आई जबै ॥ लीन्हें झपटि टि उखारि बृक्ष बहु बृन्दहै । परहां । क्षण मधि कियो निकन्द निशाचर कन्द हैं ११ सचिव बिभीषण डरन लगे कपि त्रासते । त्राहि त्राहि रघुबीर उचारत आसते ॥ तब तूरण हनुमान जितै जावत भये । परहां । सकलहिये समझाय भेद गावतभये १२ लङ्कामधि लङ्केश महोदरते कहै । कब आये इत राम समय सुनिबो चहै ॥ अविदित आगम दिवस मोहिं रघुराज को । परहां । बन्द्रोबस्त नहिं कियो समरके काज को १३ सीयसमर्पहि राम यही उरआनिकै । मन्त्रिमहोदरनाम सुकहत बखानिकै ॥ बानर बरबाहिनी नयनलखिलीजिये । परहां । रामागम दिनकहत श्रवणगत कीजिये १४ ॥ महोदरउवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ धरहिगई नम्रता, धराधर धूजनलागे । क्षुभित अखिल अम्भोधि, करण गिरि कूजनलागे ॥ बरषागमसम बैरि, बधू बरषन्त नयनपथ । बाहिनि पदप्रक्षेप, धूलि आच्छादित रविरथ ॥ लङ्केश आप जान्यो न किमि, रामजैत्र यात्रादिवस । ध्रुवधोलधाम धूजन लगे, शेषकमठ सँकुचित अवस १५ ॥ समस्या ॥ सूर्योदय के समय रुदन चकईकियो ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ जयप्रयान रघुनन्दभयो हो जा समै । अतिशय धूलि कदम्ब उड़े हैं तासमै । शशिप्रभ छत्रनिहारि नैनफाट्योहियो । परहां । सूर्योदय के समय रुदन चकई कियो १६ दोहाछन्द ॥ सहायार्थ सुरपतिदिये, छत्र तुरग गजआदि ॥ तिनकरि शुभशोभित भये, रघुबर राम अनादि १७ ॥ कविरुवाच ॥ पुनि रावण बूझनलग्यो, कहहु महोदर कुत्र । किहिं किहिं ढिग का का करत, रघुबर दशरथपुत्र १८ ॥ महोदरउवाच । षट्पदछन्द ॥ कहत महोदर ग्रीव, लसत सुग्रीव गोदमें । अक्षनिहन्ता अङ्क, अंघ्रि विलसत

विनोदमें॥ चारु कनक मृगचर्म, उपरि अखिलाङ्ग विराजत। अनुजार्पित धनुसज्ज, सशरकरधर छबिभ्राजत॥ अति तीक्षण अक्षीण कोणकरि, वीक्षमान तव लङ्कपुर। संदत्तकरण त्वदनुज बचन, राम धीर रणधीर उर १९ बद्धसेतु भ्रूभङ्गबन्दि, आवेदित रघुपति॥ तब मातुलत्वचि विष्ट, अनुज मन्त्रनदत श्रुतिगति॥ बाणदत्त दृष्टयर्द्ध, लषणलखि कृतसास्मितमुख। ग्रीवबाहु सुग्रीव, गोदसमर्पित समस्त सुख॥ अरु अङ्गदके हनुमानके, अङ्कनमें अंघ्री उभय। लङ्केशनिहारहु नयनते, लसत राम् निज जन अभय २०॥ दोहाछन्द॥ गगनगिलित भूमीगिलित, गिलित दशहुदिशिदेख। प्लवंग पुञ्जगीता सरित, सीतापति भटपेख २१॥ समस्या॥ व्याधसदनसम लसत नभोमण्डलइते॥ चन्द्रायणाछन्द॥ देव महा उतपात मध्य दिन पेखिये। कचित मीन कहुँ मेष दृष्टि दे देखिये॥ कित लम्बित कृत्तिका, सार्द्र मृगशिरकितै। परहाँ। व्याध सदन सम लसत नभोमण्डलइतै २२॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ साभ्यसूय रावण बदत, अहो महोदर पश्य॥ नहिं प्रताप तप सहि सकत, आफताबहू यश्य २३॥ रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ मम प्रतापतति तीव्र, ताप संतप्त प्रभाकर। पूरब पश्चिम जलधि, बीच डूबत निशिबासर॥ प्रविशति बारिधि मध्य, नाथ बैकुण्ठ निरन्तर। निवसत नित हिमगिरी, शान्तिहित सतत त्रिपुरहर॥ क्षणमात्र कमल छोरत नहीं, कमलासन आसन कियो। शिरछौनि छत्र लिये शेष, अहि कमठ तासु आश्रय लियो २४॥

इति श्रीमत्पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि-टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेरावणमहोदर-संवादोनामचतुर्स्त्रिशोल्लासः॥ ३४॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ इतने अन्तरमध्य सुबिपिन अशोकते। शरमा चतुर लुकाइ लङ्कपति लोकते॥ सिय तत्रस्थ

विमान बीच बैठायहै। परहां। पीतम प्यारे राम दिये दरशायहै १
निमि नृपनन्दिनि नैन कलित कमनीयहै। रामरूप अभिराम प-
रम रमनीय है॥ उभय न भयो मिलाप सरस.शोभाभई। परहां।
तरु तमाल पर जाय यथा मधु करिछई २॥ दोहाछन्द॥ इमि पिय
दरश कराय कै, शरमा चतुर सुजान। पुनि अविलम्बित जानकी,
पहुंचाई निजथान ३॥ कविरुवाच। बरवैछन्द॥ राम कटक बानर भट
लङ्क निहार। करि उतप्रेक्ष अलंकृति बचन उचार४॥ बानरभटाऊचुः॥
जघन कनक प्राकारा रतन दुकूल। त्रिकुटाचल बनिता जनु
लङ्कातूल ५॥ कविरुवाच॥ रावण लङ्कामधि इमि बचन उचार।
अहो महोदर मन्त्री सुनिये सार६॥ रावणउवाच॥ कुम्भकरण सोवत
है जाहि जगाउ।निद्रा रसिक निरन्तर उहिं इत ल्याउ७॥कविरुवाच॥
कहि तथास्तु तित गवनेउ सचिव समस्त। कुम्भकरण सोवत
जित निद्राग्रस्त ८ करि करि अति उच्चस्वर कूपुकार। कर्ण रन्ध्र
मुख धरि धरि किय चिकार ९ तनक न सुनत निशाचर हारे हीय।
तब तिन प्रति उचरत हैं ताकी तीय १०॥ समस्या॥ जिहिं गल-
करन्ध्र मधि मशकइव, बानरयूथ प्रवेश किय॥ कुम्भकर्णाङ्गनोवाच।
षट्पदछन्द॥ कहा करत उपचार, जगावन कुम्भकर्ण है। किये
सुबारम्बार, शब्दकरि पूर्णकर्ण है॥ कछु लीजै बिश्राम, याहि निद्रा
न तजत है। यहहू आठौयाम, निरन्तर ताहि भजत है। अब अवैं
-कवन उपाय बढ़, सुनि करिलेउ बिबेकहिय। जिहि गलकरन्ध्र
मधि मशक इव, बानरयुत्थ प्रवेश किय ११ गजाक्रमण अरु घोर,
सचिव चिक्कार शब्दकरि। जब न जग्यो वह कुम्भकर्ण तब शङ्क
सकलधरि॥ अब किहि बिधि जागिहै, अमित उर करत अँदेशा।
बिना जगाये कूर, कोप करिहै लंकेशा॥ गन्धर्व यक्ष सुर सिद्ध बर,

किन्नर कामिनि कलितकृत। बरगायन गीतामृत सुनत, भौबि-
निद्रचैतन्यघृत १२ ॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द ॥ उत्थापन अवलोक,
कुम्भकरण बड़ बिकटवपु। सभय भये कपिलोक, लखि मारुति
आशिष बदत १३ ॥ हनुमानुवाच। षट्पदछन्द ॥ जिहि जृम्भा
संभार, भीम भ्रूकुटी तट भासत। कुम्भकर्ण अट्टट्टहास, व्याकोश
बिकासत ॥ अद्भुत बदन बिलोकि, चकित चित प्राणि पुण्यपद।
मृदुल मृणाली मिथिल, सुता सँग राजहंसहद ॥ सिन्दूर पूर्व गिरि
शिखर शिर, शेखर श्रीरघुवर बिमल। भय बिकटयुक्त कपि कटक
के, बर बिभूतिप्रद होहुभल १४ ॥ कविरुवाच ॥ लङ्कामधि जब कु-
म्भकर्ण सुप्तोत्थित दरश्यो। कवलितकृत पल शैल, जाल तीव्रा-
सव परश्यो ॥ तृप्तभयो न तथापि, बचन मुख उचरत ऐसे। गङ्गा
यमुना सिन्धु सुरापूरित हुंवजैसे ॥ तव तृप्तिहोय मेरी कछुक, इतने
ते का होत है। जिमि तप्तायस जलबिन्दुइव, अधिक अधिक उद्योत
है १५ ॥ कविरुवाच ॥ निज कटकस्थित राम, निरखि वपु अद्भुत
ऐसो। लङ्काशिरजिहिं जानु, अङ्ग अम्बरलौं तैसो ॥ बातात्मज ते
बदत, मारुतेयहै कहा है। अष्टधातु संघटित, किधौं यह यन्त्र महाहै॥
तब युगलहस्त पुटजोरिकै, पवनपुत्र उचरन लग्यो। यह यन्त्र नाहिं
महराजजू, कुम्भकरण सोवत जग्यो १६॥ चन्द्रायणछन्द ॥ कुम्भकर्ण
लङ्केश निकट जब प्राप है। सिय अर्पहु यह अभिप्राय उर आप है॥
जउ आयसु क्षितिपाल प्रचर सर्वत्र है। परहां। शास्त्रदीप संचार-
करत नृप अत्र है १७ भ्रातृ बचन सुनि कह यथार्थ लङ्केश है।
निस्संशय बच शास्त्र सु इष्ट अशेशहै॥ तदपि न तजिहौं सिया यहै
अभिप्राय है। परहां। बदत बचन सावज्ञ सुनावत ताय है १८ ॥
रावणउवाच। षट्पदछन्द॥ फाटिकाचल उच्छिप्त,शिखर श्रेणी घृष्टाङ्गद।

प्राप्त प्रतिष्ठा परम, पीनतर भुज बिलसतहद ॥ समर सुरासुर भयद, कितहु पावत न पराजय । नरबानरहै कहा, क्षणकमधिहोय मोर जय ॥ अति तोर भुजाडम्बर बृथा, भई त्वदाशा शिथिलसब । अति निद्रा बाधतहै तुम्हें, जावहु निद्रानिलयअब १६ ॥ कविरुवाच ॥ कुम्भकरण हुइभीम, भणत भारती भयङ्कर । बलवद्विद्विष शोक, शल्य संपूरण परिहर ॥ पावहुनाहिं निषाद, रहहु कल्याण समाश्रित । अहमहमिक या अहं तनक, नहिं तुहिं तजिहौं इत ॥ कह काल बिधाता है कहा, का अरिकुल भयकहा यम । यमदूत कहाको राम है, के कपींद्र रण कुपितमम २० ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ सुनि रावण सानन्द बचन उचरत भयो । सुभट संग बललेउ पराक्रम प्रबलयो ॥ रण प्राङ्गण अवतुरतु बच्छ उच्छाहते । परहां । शीतल करिये हीय रिपुनके दाहते २१ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ कुम्भकरण साक्षेप, यथारथ तिहिविधि कीन्हो । उरसि अमित उत्साह, समरवर मारग लीन्हो ॥ जिन भाजहु कपिमल्ल, समय हुइकै संगरते । कुम्भकरण नहिं भिरत, कदाचितहू बानरते ॥ जउ लघु जलधरको पात तउ, स्वल्प सरित नहिं संचरत । पुनि मशककुटुम्बन केशरी, कबहूँनिकन्दन नहिं करत ॥ २२ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेकुम्भकर्ण रणाङ्गणावतरणंनामपञ्चत्रिंशोल्लासः ॥ ३५ ॥

कुम्भकर्णउवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ नहिं बाली न सुबाहु, न खर त्रिशिरा अरु दूषन । नहिं ताटक अभिधान, तथा ताला वह रूपन ॥ नाकछु सेतु समुद्र, रुद्रधनु ना मुहिंमानो । कुम्भकर्ण ममनाम, कालमूरति पहिंचानो ॥ रे रामप्रतापानलकवल, बीर मौलि नरशल्य सम । संग्राम भूमि बिचरत फिरत, कोपि बुलत नहिं तुल्यमम १ ॥

कविरुवाच ॥ तदनन्तरउत्पत्य, गगनमधि अविलम्बित अति । बाहु मूल गहिलियो,लपकि सुग्रीव प्लवगपति ॥ पुनि भुजकरि रविकरठ देश दृढ़ पीड़ित कीन्हो । कुम्भकरण सानन्द, लङ्कपुर मारगलीन्हो ॥ कपिराज तूर्ण भक्षण किये, कर्णघ्राण अतिहरषिहिय । कूर्पर प्रहार करि उदरमधि, पुनरागमनिज शिबिरकिय २ ॥ दोहाछन्द ॥ रखत निरन्तर शूरपन, शूर्पणखा भलभ्रात । भगिनीसम अब इतउतै, आवत जातलजात ३ आनन कहा बतायहौं, कपिलै नाक कटाय । जग मधि जीवनते जबहिं,लीन्हों हियो हटाय ४ कुम्भकर्ण बिन कर्णको, बहुरिभयो बिन नाक । अब जीवन नहिं उचित है, उचरत गदगद बाक ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ लम्बनिसासे डारि, बिलोचन बारि बहतहै । स्वात्मजलांजलिदेय, चपलचित मरण चहतहै ॥ छेलोकियो मिलाप, होय सकरुण लङ्काते । गहि त्रिशूलकर चल्यो, समर विरहित शङ्काते ॥ क्रोधान्ध कालमूर्त्तीनयन, प्रलयानल अङ्गारगण । संछिन्नघ्राण अरु कर्णयुग, कुम्भकर्ण अवतीर्णरण ६ तिहिं बिलोकि संत्रस्त, चित्त करि भूरि भये हैं । जीवितआश बियधारि, कितक गिरि कुहर गये हैं ॥ केते प्रचलित चरण, बात आकाश उड़े हैं । भ्रमरचरड दोर्दण्ड, परस पुनि पुहमि पड़े हैं ॥ मुखघ्राण रुचिर चय बमत, तित प्राण धरत संकष्ट है । फूत्कार करत अति बारबहु, मनो महा अहिदष्ट है ७ ॥ कविरुवाच ॥ त्रिनयनदत्त त्रिशूल, तड़ित कोटी प्रभुपूरण । मनो केतु संहार, कियो उच्छेपन तूरण ॥ घोर प्रज्वलित महाताकि तित उर तारापति । चपलचलायो चरड, प्राणहारक अद्भुतगति ॥ जानकीकन्त जानत सबै, शरकरि छेद्यो बीचते । सुग्रीवसखा निज प्राणसम, बचो निशाचर नीचते ८ गहि मुद्गर कपिकटक, बीच घटकरण महातुर । क्रोधानल अरु जाठरागि करि भयो क्षुधातुर ॥ एक

कमलमधि लिये, कोटि बानर अति उतकट। बदन मध्यरखि सद्य, अदन कृतभट अति उद्भट ॥ कपिचरण मीसिडारे अमित, कर्णरन्ध्र केते कढ़े। पुनि पकरि पकरि चर्बितकरत, दाबि दाबि दशाननबढ़े ६ सव्य स्वकर करि सान्द्र, शिबिर कपिकटक बिदारन। बिद्यमान बर बिपुल, बीर बानर बनबारन ॥ प्राणकरनको हरन, हार सुग्रीव बिलोक्यो। कुम्भकर्ण अतितूर्ण, ताहि उत्तरकर तोक्यो ॥ मम बपु बिरूप करता, यहै महाबैर मनलायकै। लेचल्यो चपललखि, गगन मग महाधूत ध्रुवधायकै १० अङ्गदलखि निज तात, दुष्ट लेजात लपटिकै। कुम्भकरण प्रतिगयो, बीरबर झटिति झपटिकै ॥ गरुड़पास करि भुवि, निपात किय अरि अति तूरन। कछु सचेत सुग्रीव, होत उतनै उहि पूरन ॥ पापिष्ठ तनक बिसरत नहीं, खलु खिसानपन खीजको। नरसिंह पास बांधे युगल, काका अवर भतीजको ११ दुहुँन बद्ध लखि नील, प्लवँग निज अनलरूप करि। कुम्भकरण मुख कन्ध, मौलि श्रुति घ्राण उदरभरि ॥ तीव्र ज्वाल किय दाह, कुपित ह्वै सकल अङ्ग जिहिं। बिकल भयो क्रव्याद, कुटिल खल कुम्भकरण तिहिं ॥ सुग्रीव अवर अङ्गद उभय, बानरेन्द्र प्रोत्थित तदा। कपि कटक बीच आनन्द अति, युगल जोय छायो यदा १२॥ कविरुवाच ॥ लङ्केश्वर शिखरस्थ, निहारत रावण रनको। भ्रात जरत लखि सुधा, बारि बरसाये घनको ॥ शीतल भयो शरीर, सचेतन कुम्भकरन है। भक्षण चह नलनील, यथा अहि युग सुपरन है ॥ गहि लिये लपकि दुइ कपिन कों, सब बानर देखतरये। जब जाम्बवान जर्जर जरठ, उग्रबेग आवतभये १३ जाम्बवान अतिं उग्रं, बेष बिपदा बिदरन है। निज भुज गुरु मदयुक्त, निरन्तर कुम्भकरन है ॥ जासु बन्ध कियं कण्ठ, गाढ़ रचि असुर गिरायो।

जिमि गिरीन्द्र दम्भोलि, नील नल युगल छुटायो ॥ तब ऋक्ष-राज शिर ऊपरे, सुमन बृष्टि किय मरुतगन। करि क्रोध निशा-चर तूर्णतिहिं, कियो गुल्फ आघात तन १४ आलच्छित रघु-बीर, सलक्ष्मण चले मरुतसुत। कालान्तक सम शत्रु, विशाङ्कित उरजाउतउत॥ समरथान अवतीर्य, चार्य बहु धैर्य धुरन्धर। रम्य रुद्र अवतार, उग्र कपि कटक पुरन्दर॥ अति अरुण अक्ष नरसिंह सम, निजकर पर गिरिवर लिये। किल कलश करण बिकरण नि-कट, बिकट सुभट हरषत हिये १५ पवनपुत्र पटुपाणि, पद्म पर्वत छबि कैसे। मेरु शिखर पर सरस, शोभ मैनाकजु जैसे॥ कुम्भक-रण के करण, मञ्जु मुद्गर सोहतहै। मनु मन्दरगिरि अग्र, अजनजन मोहतहै॥ कलपान्त समरमधि मरुतसुत, गिरिगिराय शिरऊपरे। मुद्गर प्रहार क्रव्याद करि, भूधर पटक्यो भूपरे १६॥ दोहाछन्द॥ आञ्जनेय करिकोप उत, अद्भुत दई चपेट। द्रुत मुद्गर क्रव्याद को, लिय लंगूर लपेट १७॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ इहि अन्तर मधि राम, बिशिख संधान किये हैं। इन्द्रदत्त शर युगल, तीक्ष्ण तिहिं समय लिये हैं॥ कुम्भकरण के निधन, काज रण बीच चलाये। एक हृदय अरु द्वितिय, बिशिख शिर छिन्न कराये॥ नभ नमोनमो जयजय धुनी, सब सज्जनजन शरनभो। लङ्केश बाहुबल हरण भो, कुम्भकरणको मरणभो १८ मारुति चण्ड चपेट, गिस्यो मस्तक तुहिनाचल। जिहिं कपाल जलमध्य, डूबिहै भीम महाबल॥ पुनि क्रव्याद कबन्ध, पुच्छ गहि गगन उड़ायो। चल्यो गयो आकाश, पेख पार न कोउ पायो॥ आनन्द भयो कपि कटक मधि, दुसह दु-रित दुख दरणभो। लङ्केश बाहुबल हरणभो, कुम्भकरण को मरण भो १९॥ दोहाछन्द॥ राम वीर्य अविलम्बि उर, दरणत लक्ष्मणभ्रात।

उच्चस्वर गम्भीर गिर, कह कबन्धबलुख्यात २० ॥लक्ष्मणउवाच॥ षट्पदछन्द ॥ बाजू बिबुध बिमान, दूरलीजे रबिस्यन्दन। असुराधम अधराङ्ग, उछार्‍यो अञ्जनिनन्दन ॥ रे रे बानर बीर!, असुरत्रय सुनहु बचन मम। रण प्राङ्गण परिहरहु, रहहु एकान्त चहत हम ॥ जनु अञ्जनाद्रि प्रतिनिधि अवधि, बिस्मापक जु अबन्ध है। आतङ्क हेतु लङ्का गिरत, कुम्भकरण कुकबन्धहै २१ ॥कविरुवाच॥ तनुतेभो उत्क्रान्त, प्रबर सुरबधु लिय भुज भरि। नारदादि संगीत, मधुर मृदु सुर जनरवकरि ॥ नहिं बिमान आरोह, करत जउ कृष्यमाण है। अभिलाषा उर रही, भर्त परित्राण प्राण है ॥ जिहिं पुनरपि समरच्छालसत, ध्रुव सङ्गर मधि धीर है। किमि शिव शिव शिव बर्णन करैं, कुम्भकर्ण बड़ बीर है २२ लखि लङ्का शिखरस्थ, बदत रावण बिस्मय सह। मरुत चन्द्र आदित्य, इन्द्रमुख कृतंभुज जहँरह ॥ उपसर्पत अनुदिवस, भये संतत जिहिं मोपर। सकल सुरासुर करि, अजेय अबिरत लङ्कापुर ॥ किय कोप बिकम्पित अधर तट, पुट बानर भट बिकटकरि। अति समाक्रान्त त्रासित भई, शिव शिव शिव दशमुख नगरि ॥ २३ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपाखरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापित
कविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे
कुम्भकर्णवधोनामषट्त्रिंशोल्लासः ॥ ३६ ॥

अत्रहनुमन्नाटकेएकादशोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ रावण भयो सकोप, तूर्ण सम्पूर्ण सेनसह। समरयज्ञ अध्वर्यु, इन्द्रजित अङ्गज किय वह ॥ कुम्भकर्ण बध अकनि, भयो आमर्ष बिमूर्च्छित। सीतापति बधबद्ध, लक्ष अवतीर्ण समरजित ॥ इत लक्ष्मण धनु गुण सज्जकरि, टणत्कार धरणी गगन। आपूरित कोपानल प्रबल, ज्वाला:बलिमाला मंगन १ सुनासीरजित्त तितै, लपण नासीर

अग्रहत। लङ्का लङ्कापाल, सहित किय करण कतल चित॥ मेघ-नाद लखि लक्ष,बचन मुख उचरत ऐसे। अल्पहु कारण नाहिं, कोप करियत इत कैसे॥ थिर शुद्ध बुद्धि बिन हेतु नहिं, कृपाक्रोध किलकरतकब। कृत संचित चञ्चल चितै नर, नेह कोह बिन काज सब २ हरि बिजहत संत्रास, भिन्न शक्रेभ कुम्भथल। लज्जा पावत बिशिख, तिहारे बपुष क्षुद्रबल॥ तिष्ठ तिष्ठ सौमित्रि, त्वमपि नहिं क्रोधपात्र है। मेघनाद मम नाम, बज्रसम अखिल गात्र है॥ भ्रूभङ्ग-मात्र नियमित जलधि, रामचन्द्र रघुबीर है। अति तूर्ण ताहि ढूँढ़त फिरत, वह मम संगर धीर है ३ अञ्जनिसुत सुग्रीव, नलाङ्गद नील प्रमुख कपि। घन घमण्ड थित मेघनाद नहिं लखत किंचिदपि॥ दियो बरफ बर्षाय, बिपुल किय अन्धकार है। करत घोर शरघात, निरन्तर बारबार है॥ अधिरुह्य महद् माया सुरथ, नभ थल थित गम्भीर गति। करि काल जलधि धुनि गर्जना, रावण बाल करालअति ४॥ दोहाछन्द॥ यथामेरु मन्दरगिरी, वासव बज्र निपात। नागपाश शर बद्ध तिमि, राम लषण युगभ्रात ५॥ समस्या॥ चन्द्रउदित चित चकित, मुदित मन निर्तत चकई॥ रोलाछन्द॥ इहि अन्तर मधि पूर्व, बैर सुमिरण किय कोकी। सरवर थित वह दशा, भ्रात युग नयन बिलोकी॥ शापतहौ मम दयित, राम रावनि हततकई। चन्द्र उदित चित चकित, मुदित मन निर्तत चकई ६॥ षट्पदछन्द॥ बन्धन दश-रथ नन्द, अकनि रावण आयसु दिय। सुमन बिमान बिठाय, बता-बहु पिय देवरसिय॥ कहि तथास्तु लेगई, निशाचरि शरमा तित को। राम लषण युग बन्धुबध थित रण मधिजितको॥ द्रुत देखि दुर्दशा दुहुँनकी, जानकि जिय शोचनलगी। बर बारिज से युग नयन ते, नीर निचय मोचन लगी ७ भार्गव गौतम च्यवन, शिष्ट

कश्यप बशिष्ठ मुनि। लोमश कौशिकप्रमुख, गिरामुख ज़्योतिष मत चुनि॥ सुनि समीप आपके, मग्न चूचुका जिहिं तियतन। संतत सधवा रहैगहै, कबहुँ न बिधवापन॥ ते त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ ऋषि, सत्य बचन बक्ता सबै। तिन आशिष किमि मिथ्या भये, उर अचरज आवत अबै ८॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ हां प्राणेश्वर राम फुरत सब अङ्गहै। बाहु नयन नहिं अनृत अशेष अभङ्गहै॥ तनक नाहिं सुखदेत माधुरी दृष्टिमें। परहां। भुजबिलास लुकि रह्यो कहौं किहि सृष्टि में ६ मात तात अनुजातरु अग्रज मानितां। मनसि तनक मुदलेत सकल सन्मानिता॥ पावत परमप्रमोद किंचिदाश्वासिता। परहां। जिमि रमणीय रमणीय रमण बिश्वासिता १०॥ षट्पदछन्द ॥ प्रत्युत्तर नहिं पटल, प्राणपति पीतम प्यारो। हाहा लक्ष्मण बन्धु, मोर अपनयन निहारो॥ रुष्ट भयेहौ कहा, कछुक उत्तर न्याहत हम। भूरि भूभ्रमण कीन, कज्ज मम भयो भूरिश्रम॥ अब स्वर्ग सकल अवलोकिबे, सिद्ध करत किमि भ्रात युग। दुर्दशा देखि दुहि बीरकी, उर अन्दर अतिशय तरुग ११ लखि है नहिं दिविलोक, मोहिं बिधिलोक सिधैहै। बिना किये मम शोध, उभय कितहुँ न थितिपैहै॥ कीजै प्राणप्रयान, स्वर्ग मधि संगम दीजै। कहा निहारत राह, प्राणपति मारग लीजै॥ लखि इमि अचेत अति जानकी, शरमा समझावत तबै। बैदेहि बदत कह बावरी, युग मूर्छित जागहि अबै १२॥ दोहाछंद ॥ सुनि शरमा शुचि बचन सिय, पुनि निज नाह निहार। शोच बिमोचन कीन कछु, लम्ब निशासे डार १३ रावण के भयभीत ह्वै, शरमा परम सुजान। बन अशोक मधि लेगई, सियसह सुमन बिमान॥ १४॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेजानक्यशोकवनेपुनरागमनंनामसप्तत्रिंशोल्लासः॥ ३७॥

कविरुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ हाहाकार होय रह्यो त्रिभुवन मध्य महा, कीनो कर्म घोर घननाद क्षिति छायो है । सुन्यो है सुवर्ण शोर जाको विभु भौनबीच, कोधानल अङ्ग अङ्ग भूरि भभकायो है॥ पक्षन पवन बृक्ष लक्षन अगेन्द्र उड़े, तमीचर तोमयुक्त रावनि त्रसायो है। स्वामिहि जिवायो सुधा बारि बरसायो सद्य, बिनताको जायो बेग धामधाय आयो है १॥ दोहाछन्द ॥ रामकृपा अवलोकते, भये सचेत समस्त। मेघनाद सङ्कट सहित, तीन ताप तनुत्रस्त २॥ षट्पदछन्द॥ बिरच्यो परम प्रपञ्च, रची माया बैदेही। बिलपत मुख हा रमण, प्राणप्रिय परम सनेही॥ भो प्रबीर पश्यन्तु, पठत प्रबचन मुख पापी। कीन्हो खड्ग प्रहार, माय मैथिलि संतापी॥ करि द्विधा ताहि पुनि ग्रहणकरि, गगनमार्ग रथ मधिगयो। ब्रह्मोपदेश गिरिनिकुम्भिल, वटसूला बटथित भयो ३ संगर चत्वर बीच, निधन निरख्यो मायासिय। उरबीतल गिरि राम, परम गुरबी मूर्च्छालिय॥ रघुबर निरखि सशोक, मरण दुहिता जान्यो जब। महि हिय भयो बिदीर्ण, गोद लीन्हे राघव तब॥ शाश्वत पुराण अज नित्य तुम, स्मरणरूप निज कीजिये। इमि अवनि उचारत रुदन करि, सो श्रवणन धरिलीजिये ४ बिकच नलिनि निर्मुक्त, मञ्जु मलयज रसजलकरि। सिंचत धाराधारि, शान्ति हित शुचि रामोपरि॥ सौमित्री पुनि पठत, कछू निश्चय न निहार्‌यो। जामदग्नि मुनि शाप, मुग्धपन प्रकट प्रचार्‌यो॥ लखि चख चकई सानन्दहुव, शाप सकल सप्रमाण है। गुरु आज्ञापालन धर्म किय, सो समस्त अप्रमाण है ५॥ दोहाछन्द॥ मिल्यो कछू ना धर्मफल, प्रकट शाप फल पेख। इमि करिकै आलाप कछु, बिलपत लषण बिशेख ६॥ चन्द्रायणछन्द॥ कोप नयन इक लखत, कमलिनी कान्त है। अपर आक्षि प्रक्षेप

बिरह पति स्वान्तहै॥ अस्त समय रबि पेखि चकई गति असभई।
परहां। रुद्र करुण रस युगलरूप चख छबिछई ७॥ षट्पदछन्द॥
तत्र निकुम्भिल अद्रि, मूल निग्रोध अंवट में। अति सत्वर घननाद,
बिभीतक समिध सुथटमें॥ अर्द्धचन्द्र आकार, कुण्ड निजपल आ-
हुति दिय। शत्रुञ्जय रथ अर्द्ध, कढ़यो लखि भो हरषित हिय॥
हनुमन्त तूर्ण तित जायकै, असुर यज्ञ भञ्जन कियो। भो मुधा मनो-
रथ दुष्टको, सिद्ध काज कछु ना लियो ८ रण प्राङ्गण मधि अक्ष,
लगायो लक्ष स्वच्छमन। शनिते लिय दशरत्थ, नृपति ते लियो
लक्ष्मन॥ स्मरण कियो संहार, अस्त्र सानन्द बचन कह। रेरे माया
रथारूढ़ सुन मेघनाद यह॥ करि छिन्नभिन्न माया बिपुल, तोहिं
पठैहौं शमनपुर। ह्वै सावधान संगर सजउ, असुर हूजिये गाढ़उर ९
दोस्तम्भन आस्फाल, केलि फुट बिकट ध्वानकरि। ध्वस्त महातम
घोर, प्रबल संहार अस्त्र करि॥ धनु संयोजन केलि, पानि आहत
पुहुमीतल। धीर बीर क्रोधान्ध, उदगिरत अनल दृगञ्चल॥ सौ-
मित्रि छेदि घननाद, शिर हीरक मण्डित मुकुटयुत। लङ्केश पाणि-
पुट युगल मधि, अर्पण कीन्हो आपउत॥ १०॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि-
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेइन्द्रजीत-
बधोनामाष्टत्रिंशोल्लासः॥ ३८॥

अत्र श्रीहनुमन्नाटकेद्वादशोङ्कः। षट्पदछन्द॥ सुत निज निधन निहार,
निशाचरनाथ कुपित अति। अरुण बरण दशबदन, बदनदश
नयन बिंशतति॥ एक बीरघातिनी, शक्ति प्रक्षेप कियो है। लखित
लक्षमण बच्छ, स्वच्छ लखि लच्छ लियो है॥ हनुमन्त गहि लई
बीचमें, जलनिधि मधि छेपनकरी। रावण सकोह ह्वै सद्य तब, बध
बिरञ्चि इच्छाधरी १ शक्ति ग्रहण बिलोकि, महामन कोप छयो है।

चतुराननं बधकरन, दशानन उदित भयो है॥ सभय भयो परमेष्ठि, सुवन नारद सुमिस्यो तब। सुर ऋषि हाजिर होय, हत्थ दोनों जोरे जब॥ बिधि बदत बच्छ यह मरुतसुत, जबलौं सङ्कर है थित। इक बीरघातिनी शक्ति की, शक्ति कछू नहिं चलत तित २ शक्ती भये अशक्त, यहै रावण मुहिं मारत। इहि दुखकरि भो बच्छ, हैरयो अतिशय आरत॥ स्थानान्तर ले जाउ, मरुतसुतको सुत सत्वर। करिलेहैं निज काज, इतै रावण रण चत्वर॥ निज जनक मरण भयमानि, मन मुनि नारद रण थलगये। पटु पवनपुत्र तिहिं थान ते, तूरन ले जावत भये ३ करि कृतान्त सम क्रोध, ज्वलित हृदयानल रावन। राक्षसेन्द्र अति उग्र, बे१ बैरी बिद्रावन॥ शक्ति ग्रहण करि याद, अधिक उर भयो अमर्षित। उग्रमन्त्र अभिमन्त्रि, निधन सौमित्रि चहत चित॥ गहि चपल चलाई सांग, सो लक्ष बच्छ बेधतगई। पुनि भेदि भूमिमण्डल सकल, कूर्मराज भेदतभई ४ प्रौढ़ उग्र नर तेज, प्रलय समुदित अति कोपित। रावण भुज ते चली, चपल गर्जत तर्जत तित॥ दीपित किय दश दिशा, लक्षवर बच्छ बिदारत। हाहाकार प्रलाप, सकल जनबदत उचारत॥ कृतकम्प देव दैत्येन्द्र सब, स्तूयमान ब्रह्मादिसुर। इक बीरघातिनी शक्ति वह, प्रविशत पती भुजङ्गपुर ५॥ दोहाछन्द॥ इहि अन्तर आये उतै, स्थानान्तरते तूर्ण। हनूमान हेरतभये, करुण मगन सम्पूर्ण ६॥ षट्पदछन्द॥ पूरण पश्चात्ताप, बिभीषण बलकृत पेखत। क्षीणतेज सुग्रीव, ऋक्षपति मूढ़ विशेषत॥ भये अगोचर सदृश, सकल शाखामृग भासत। शक्तीप्रौढ़ प्रहार, लषण मूरछा बिकासत॥ रघुराज राम बिलपत बिबिध, अतिछायो करुणाकटक। थिरहोय सबैथित रीजिये, इमि उचरत हनुमत हटक ७ भये शर्बरी समय, बिभीषण

चले समर महि। कोशजीव निर्जीव, निहारत ज्वलदुल्मुकमहि ॥ शक्ति ज्वाल प्रज्वलित, मूर्छितलये सकलकपि। जाम्बवान उपविष्ट, एकअवलोक्यो यद्यपि ॥ असुरेश निहारत ऋक्षपति, धरि धीरज बूझतभयो। हनुमन्त विपुल बानरप्रवर, कहहु कुशल जीवतरयो ८ ॥ दोहाछन्द ॥ सुप्रज प्रभञ्जन अञ्जनी, जिहिजाये जगजोय। कुशल सुनत कपिप्रवरको, मम हिय हर्षित होय ९ ॥ विभीषणउवाच ॥ न सुग्रीवमें राममें, नहिं अङ्गद में नेह। हनुमत मधि दर्शितकियो, हिय थित सरस सनेह १० ॥ जाम्बवानुवाच ॥ जो जीवत दुर्धर्ष वह, हतबल अहतप्रमान। अरुण होय हनुमान तो, जीवत मृतक समान ११ जाम्बवान युत बिभीषण, तूरण पहुँचे तत्र। पृष्ठभाग थित मरुतसुत, बिलपत रघुपतियत्र ॥ १२ ॥

इति श्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेविभीषण जाम्बवान्संवादोनामैकोनचत्वारिंशोल्लासः ॥ ३९ ॥

कविरुवाच ॥ दोहाछन्द ॥ राम निरखि लङ्केश चष, अति तीक्षण हुवपीर। क्षण क्षण क्षण बिलखत अधिक, धरत न किहुँबिधि धीर १ श्रीरामउवाच ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ भ्रात दिवंगत तोर संग मम प्राणहैं। सो सुनि करिहैं सीय सुत्रिदिव प्रयाण हैं ॥ गहिहैं गिरि कपि कटक खटक हिय हायहै। परहां। यहै बिभीषणबीर कहो कित जाय हैं २ भोजन मोहिं कराय फलादिक पेल हैं। तदनन्तर तुम गहे अनुजकी गेल हैं ॥ पुनि पिवाय पानीय तदनु पीवतरहै। अरिहां। किमि कीन्हो क्रम भङ्ग क्यों न जीवत रहै ३ मोको प्रथम सुवाय फेर सोवत रहे। क्रम न तज्यो किहि ठौर सुमग जोवतरहे ॥ अबै स्वर्ग सुखकाज अनुज आगे गये। अरिहां। हम इत अगंलीराह चिन्नचितवत रये ४ गहौं स्वर्ग सुख सकल त्रिबिष्टप जाय है।

इतै बिनशि है राम भयो असहाय है ॥ तुम्हरी गति विपरीत पेखि सन्ताप है । परहां । प्रकट कियो सापत्न भाव किमि आप है ५ तार सुरन करि सबै तबै रोवन लगे । राम चन्द्र मुखचन्द्र सकल जोवन लगे ॥ भये बिपुल बेहाल कछू नहिं अटक है । परहां । छाय रह्यो कपि कटक करुण रस कटक है ६ ॥ षट्पदछन्द ॥ पुनि पुनि रोवत राम, कहत हा वच्छ लच्छमन । सेवन कियो सदैव, अहर्निश मोर स्वच्छमन ॥ पवनपुत्र धिक्कार, तोहिं तजि भयो पराङ्मुख । तेहि ते संगरमध्य, प्रापभौ अति दारुण दुख ॥ मम अनुजभ्रात उद्धरत धनुष, इहिरण होतो जो भरत । तो शक्तिपात घनघातते, सौमित्री कबहुँ न मरत ७ ॥ दोहाछन्द ॥ मुधा जुधारण शस्त्रभर, यौवन बृथा हमार । तजन चहत सबिशिख धनुष, हिय निर्वेद निहार ८ ॥ कविरुवाच ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ निज अपराध निहारि त्रपा करुणा छये । साभ्यसूय भुज भरत सबल सुनिके भये ॥ कियो गारुड़स्थान हुमसि हनुमन्त है । परहां । पुरोभाग थितहोयबचन उचरन्तहै ९ ॥ हनुमानुवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ सात अम्बुनिधि दिशा, दशों गिरिगोत्र सप्तमित । भुवन चतुर्दश पृथिवि, आदि नभमण्डल इकइत ॥ एतावत परिमाण, मात्र ब्रह्माण्ड कटक है । इनमें तौ कितजाय, निशाचर नीच अटक है ॥ बिभु बिनय करत करजोरि युग, अधिक बदत अनुचर लजत । जित जाय तितै तकि मारि है, आप कहा कार्मुक तजत १० ॥ कविरुवाच ॥ चन्द्रायणछन्द ॥ बचन प्रभञ्जन सुनत सुनत रघुबीर है । गदतगिरा गम्भीर महारणधीर है ॥ श्रीराम उवाच ॥ मारुति कथन यथार्थ, यदपि सब तथ्य है । परहां । यातुधान जागर्त्ति मोहिं उन्मथ्य है ११ ॥ कविरुवाच ॥ मारुति कह यह बात, सदा स्मरणीयहै । नाहिं नीच नर नेह, कदा करणीयहै ॥ दुष्ट

करत दुखवृत, साधु है नंद्ध है। परहां। हरी दशानन सीय, वारि-
निधि बद्ध है॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामसमीरसूनु-
संवादोनामचत्वारिंशोल्लासः॥ ४०॥

श्रीहनुमानुवाच॥ षट्पदछन्द॥ पाय कछू प्रारब्ध, योग जग मधि
दुर्जन इत। हरत महज्जन मान, कथंचित क्वचित कदाचित॥
पै उनके अनुज नित, गुण न धावत पामर नहि। पावहि किमि
अधिकत्व, बिलोकहु बिपुल सकलमहि॥ स्वर्भानु रश्मि शशि
भानु की, समय पाय यद्यपि गहत। ब्रह्माण्ड खण्ड मण्डल बिषे,
नहिं ग्रहेश कोऊ कहत १॥ चन्द्रायणाछन्द॥ रावण किय उन्म-
थित रावरो मान है। दैवयोग जड़ तऊ होय किसमान है॥ बिनय
करत करजोरि सुबारम्बारहै। परहां। धीरज धरिबो सार सकल
संसारहै २॥ कविरुवाच॥ राम कहत पुनि बचन समीरनसुत रहो।
कालान्तरगत सिया कहा कारज कहो॥ बन्धु करत उपभोग नाहिं
सुख लेतहै। परहां। अरु अरिगण आतङ्क दुसह नहिं देतहै ३ ब-
च्छल लक्षण बच्छ बच्छथल भिन्न है। कृतप्रतिज्ञ हनुमन्त सबिस्मय
खिन्न है॥ सुनहु नाथ पणमोर सुरीति सदैव है। हरिहां। अय-
महोयमराजरुदेव अदेव हैं ४॥ षट्पदछन्द॥ करि प्रवेश पाताल,
सुधारस सत्वर लाऊं। अथवा चन्द्रनिचोप, प्रचुर पीयूष पिवाऊं॥
चन्द्र किरण उद्दण्ड, अखिल ब्रह्माण्ड निवारों। करि चूरणकी
नाश, पांश शासन यम टारों॥ जो होय हुकमसोही करौं, कीजै
नाहिं बिलम्ब अब। रघुराज रावरी मेहरते, मोको है आसान सब५॥
कविरुवाच॥ सुनि समीरसुत बचन, राम शोचन लागे उर। बदत
बहुन महवीर, लथा तैसे करिहै तुर॥ महाप्रलय है जाय, अनवसर

इमि कुरिवेते। इमि उर अन्दर शोधि, बचन उचरत हरवेते॥ स्या-
वहु सुखेन अभिधा भिषक, असुर ईश अनुचर यदपि। करिहै न
कपट है वैद्य वह, लखिहि चिकित्साबर तदपि ६॥ कविरुवाच॥ कहि
तथास्तु हनुमान, लङ्कपुर जाय त्वरित है। पटु परियङ्क समेत, भि-
षक भलल्याय अतित है॥ सुप्तोत्थित लखि भिषक, राम सकरुण
बचबोले। कहहु तरुण उपचार वैद्य, सुनि हिय निज लोले॥ जीवि
है भ्रात रघुराज तव, यह उपाय करिये अचिर। बल्ली बिशल्लिबर
द्रोणगिरि, चन्द्ररश्मि रजनी रुचिर ७॥ कविरुवाच॥ चन्द्रायणाछन्द॥
राम बुलाये दूत बेगको आयहै। अपनो अपनो बेग बदहु मनलाय
है॥ सुनि रघुवर बरहुकम हुमासि बोले तवै। हरिहां। निज निज
बल अनुरूप अवधि उचरत सवै ८ जावत आवत नलकहँ लगत
त्रिरात्र है। तथा मैंद अरु द्विविद कपिन्द द्विरात्रहै॥ एकरात्र
सुग्रीव नील किय कौल है। परहां। यामचार युवराज बदत करि
तौल है ९॥ कविरुवाच॥ समय आर्त्त श्रीराम सुनत कपि बैन है।
संकोचित मुख जलज सजल युगनैन है॥ संगर संकट बिकट
बीच भाशङ्क है। हरिहां। लखत रुद्र अवतार सुबदन मयङ्कहै १०
सत्वर सकरुण गह्यो, गारुड़स्थानहै। युगअञ्जलि पुटजोरि बदत
हनुमान है॥ क्षणक धारिये धीर सकल भल होनहै। अरिहां।
आवत हौं पहुंचाय भिषकबर मौन है ११ इमिकहि तिहि पहुँचाय
तितै इत प्राप है। आञ्जनेय उचरत बिमल बच आप है॥ प्रभु
हितकारक प्रचुर प्लवङ्गम पूरहै। हरिहां। दीजै आयसु अद्य अद्रि-
मग दूर है॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविजासेवानरवृन्द
वेगवर्णनंनामैकचत्वारिंशोल्लासः॥ ४१॥

श्रीहनुमानुवाच ॥ मनोहरछन्द ॥ साठलाख योजन तो जावन जहां पै बेग, साठलाख योजन को आवन जरूर है। मारुति बदत नाथ रावर प्रताप पुञ्ज, उच्चरत ऐसे नाहिं मनमगरूर है ॥ अग्नितप्ततैल थित सरसों अवाज बीच, आवो उत जायले बिशल्य बल्लिमूर है। कौन मगदूर द्रोण गौन मगदूर नहीं, पौन मगदूर पौनपुत्र मगदूर है १ ॥ कविरुवाच ॥ सोरठाछन्द ॥ सुनत मरुतसुत बैन, हिय हर्षित रघुबर भये ॥ अवध कुशलपन लैन, अपर अमल आयसु दई २ करि बन्दन रघुनन्द, कियो चन्द उड्डीत कपि ॥ द्रुहिण अद्रि सानन्द, अञ्जनिनन्दन गवन कृत ३ ॥ कविरुवाच ॥ षट्पदछन्द ॥ अब सुनिये बृत्तान्त, अवधपुर बरत्यो तितको। भयो सुमित्रा स्वप्न, बाम भुज भुजग ग्रसितको ॥ कौशल्या प्रति कह्यो, तुरत उठि उहि बशिष्ठ मुनि। शांति करावत भरत, स्वपन भयप्रद श्रवणनि सुनि ॥ सब सामग्री मँगवाय शुचि, थल इकन्त कीन्हो गमन। ढिग सशर शरासन धारिध्रुव, आज्य आहुति कृतहवन ४ ॥ कविरुवाच ॥ जबै द्रोणगिरि गये, मरुतसुत तित अतिशयद्भुत। प्रभा सुधाकर सदृश, बल्लिमणि सब निहारउत ॥ निश्चय नहिं है सकत, भ्रमण चहुँधावहु लीन्हो। तब गिरिवर लेजान, मनोरथ मनमें कीन्हो ॥ जब उठ्यो न अद्री आपते, तबै तात सुमिरन्तयो। पटु पिताएत्र युग जोरकरि, धराधरन धारत भयो ५ ॥ कविरुवाच ॥ इतै अवधपुर बीच, भरत अरु मुनि बशिष्ठ हैं। शान्ती मण्डप कुण्ड, निकट बिलसत बरिष्ठ हैं ॥ हवन करत श्रीखण्ड, काण्ड सतगर कुसुमादिक। जलजनाल कर्पूर, उसीराज्य प्रचुरादिक ॥ कृत नारिकेल पुरणाहुति, एते पै अवलोकिनभ। द्रुत आञ्जनेय आवत उतै, कर गिरिवर ज्वलदनलप्रभ ६ करनलगे सब तर्क, कहा यह इतमें

आवत। ग्रसित सुमित्रा मात, बाम भुज बही लखावत॥ अथवा मख संहारु कार धंगासुर आयो। इमि भ्रम करिकै भरत, तुरत शर तितै चलायो॥ भो बाण भिन्न हनुमान जब, महाबीर धीरन धरत। हा राम लषण उचरत, प्रबलबली पुहुमीपरत ७॥ चन्द्रायणाछन्द॥ चिरजीवी यह बीर, रहै क्षिति स्वच्छ है। बिधि लिखिताक्षर पंक्ति, लोप परतच्छ है॥ चण्ड भरत दोर्दण्ड काण्ड निर्मुक्त है। परहां। भये मारुती महा मूरछायुक्त है ८ लाग्यो पट्ट ललाट भरत भटवान है। गिरिलिय लांगुल अग्रबीर हनुमान है॥ संमूर्च्छित महिपरे बदत अभिराम है। परहां। हा रघुवर हा लषण गिरा गुणग्राम है ९ राम लषण बरनाम अमल आनन कहा। तित बशिष्ठ भरतादि भयो बिस्मय महा॥ अति आतुर ह्वै अखिल तुरत गत तत्रहै। हरिहां। महद मूरछा सहित मारुती यत्र है १० गिरतभये तिहि चरण शल्य किय दूर है। गिरिजौषध करि मुनि बशिष्ठ क्षतपूर है॥ गई मूरछा सावधान हनुमन्त है। अरिहां। बितको बर वृत्तान्त स्वल्प बर्णन्त है ११॥ कविरुवाच॥ शक्तिभेद उर लक्ष भयो हौं जा समै। राम बड़ाई भरतकरीही तासमै॥ वह करिकै इतयाद हीय हनुमन्तहै। अरिहां। साभ्यसूय करि रचन बचन उचरन्त है॥१२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेहनुमद्भरतसमागमोनामद्विचत्वारिंशोल्लासः॥ ४२॥

श्रीहनुमानुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ चन्द्र चन्द्रिका चारु रहे रजनीय है। गिरि औषध गहि तुरत तत्र गमनीय है॥ हौं थकि गयो इहैव आप पहुँचाइये। परहां। ललित लक्ष्मण भ्रात जहां द्रुतजाइये १॥ कविरुवाच॥ सुनत समर संकष्ट राम अरुलक्ष है। स्वच्छ बच्छ भल भरत प्रबल परतक्षहै॥ भुजा ठोंकि टंकार शरासन शोरहै।

परहां। लङ्का ओर निहार सुसुच्छ मरोरहै २॥ षट्पदछन्द॥ तितै समर मधि राम, बिबिध बिलपत उचरत हैं। बच्छ लच्छ उत्तिष्ठ, गहहु धनु रिपु प्रचरत हैं॥ सैन्य हनत तव असुर, ताहि तनक न तुम जोवत। प्राप्त सीय रिपुजीति, तथा निर्भय किमि सोवत॥ प्रति बचन देत नहिं भ्रातकस, प्रीति छिन्न नहिं कीजिये। केकयी मात पिय साइसे, होय कृतारथ रीजिये३॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ इतै सुनत कपि बचन भरत साटोप हैं। अद्रिसहित सुत मरुत बिशिख आरोप हैं॥ कृत कुण्डलि कोदण्ड प्लवग बिस्मितभयो। परहां। लगे करन बरतवन गरब मनको गयो ४ उतरि बिशिखते भरत भुजन पूजनकियो। कुशललेय ततकाल लङ्कमारगलियो॥ जिमि दरिद्र मन गमन दृशन्त दिगन्त हैं। परहां। पहुँचे अति अबिलम्ब बीर हनुमन्त हैं ५॥ षट्पदछन्द॥ अद्रिरुद्र अवतार, प्रलय रबि द्वादश समुदित। सदृश द्रोण दोर्दण्ड, धारि अधनिशि आगत तित॥ दत्तदृष्टि दिगभाग, पूर्ब सूर्योदय भ्रमबस। तीरतरल तरसिन्धु, तार सुरकिय रोदन तस॥ पर्वत उदोत रविउदय भ्रम, सरवरथित बिकसित कमल। कपि लखत अमित लज्जित स्रवत, अक्षिन मग आंशू अमल ६॥ कविरुवाच॥ तदनु निरखि दिगभाग, प्रभाकर उदय न पेख्यो। गिरि प्रकाश करि जलज, युत्थ बिकसन्त बिशेख्यो॥ भोरहोन भ्रम भग्यो, भूरिहिय भयो सहर्षित। गये वाहिनी बीच, राम सुग्रीव हुते जित॥ पटुपुत्र प्रभञ्जन अञ्जनी, रम्य रुद्र अवतार हैं। गहि द्रोण अद्रि अबिलम्ब उत, आवत करी न बारहै ७॥ कविरुवाच॥ मारयो माय महर्षि, कालनेमी रजनीचर। ग्राहीरूप उदय, कन्द काली मारीत्वर॥ राकस बल संमर्दि, सर्व रावण प्रेरितहरि। इन्द्रपठाये प्रबल, कोटिगन्धर्व बिजयंकरि॥

मणिज्वाल जटित आदाय गिरि, झटिति उतै आवत भये। श्री-
हनुमान कपि कटकमधि,हिय सबही हर्षितभये ८ मैंद द्विविद कपि
प्रमुष, चमूचय रक्षाकारक। गय गवाक्ष नल नील, प्रबल अरिदल
संहारक॥सीतातङ्कमहान्धकार हारक परभाकर। पवनपुत्र संप्राप्त,
हरीहर उत्सव आकर॥ कपि कटक सुभट संघटन में, यहै गल्लगो-
पालहै। द्रुतदिशातु बिशदबर लक्ष्मी, लक्ष वक्षथल हाल है ९॥
श्रीरामउवाच। दोहाछन्द॥ एकहि इहि उपकार पर, प्राण समर्पित
तोहिं। अवर अखिल उपकृतिनको, मानहु ऋनियां मोहिं१० तुम
उपकृत आपत्ति वह, जीरन ममतनु होहिं। पुनि प्रत्युपकारार्थ हित,
ह्वै न आपदा तोहिं ११॥ षट्पदछन्द॥ हनुमत कृत आलेप, अद्रि
औषध करितूरण। धरणि धरन आतमा, मूरछात्यज संपूरण॥
तरणि राम अरबिन्द, लङ्कपति कुपित कालसम। आददान धनुष
शर, क्रोधकरि भयें अरुणतम॥ प्रोत्फुल्लखदिर अङ्गारचष, टण-
त्कार कोदण्ड किय। मुखमारमार उचरन्त उत, लक्षउठे प्रोच्छाह
हिय १२॥ चन्द्रायणाछन्द॥ सहरष सपुलक साश्रुभये श्रीराम हैं।
लक्ष्मण हृदय लगाय गहे गुणधाम हैं॥ हावच्छल हावच्छ वच्छ-
थल अङ्क है। परहां। तव परिश्रम परिहार हेतु पर्यङ्क है १३
शक्ति भेद खलु खेदभयो तव पूर है। शयन थान मम हृदय महा
मुदमूरहै॥ मेघनाद कुलकमल वर्ष प्रालेय है। परहां। प्रबलभई
बेदना न आनन गेय है १४॥ कविरुवाच॥ कह लक्ष्मण करजोरि
कछुक मम खेद है। संपूरण श्रीराम बेदना भेद है॥ प्रभुउर पीड़ापरम
प्रतक्ष प्रचारहै। परहां। किंकर केवल कथन मात्र छतभार है॥१५॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीलक्ष्मणो-
त्साहवर्णनंनामत्रिचत्वारिंशोल्लासः॥४३॥

अत्र श्रीहनुमन्नाटके लक्ष्मणशक्तिभेदोनामत्रयोदशोङ्कः ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥

प्रात भये लङ्केश, बुलायो लोहितलोचन । कहहु राम प्रति जाय, करत तत्र मैथिलि मोचन ॥ जामदग्नि निर्जित्य, परशु प्रमथाधिप लीन्हो । वहहै तुम्हरे निकट, चहै रावणको दीन्हो ॥ कहि तथास्तु लोहितनयन, तूरण नभ मारग लियो । इत शिबिरबीच किय आगमन, रघुनन्दन बन्दन कियो १ ॥ कविरुवाच । सोरठाछन्द ॥ रावण दूत निहार, रघुवर बतरावन लगे । तित अधिराज तिहार, कहा करत लोहित नयन २ ॥ लोहिताक्षउवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ लङ्क निशङ्क जराय गयो अबिलम्बहै । लंघन कीन समुद्र प्रतक्ष प्रलम्बहै ॥ औषध आन बिशल्य जिवायो लक्ष है । हरिहां । मारुति ऊपरं पीसत दन्त ततक्ष है ३ ॥ कविरुवाच । बरवैछन्द ॥ सुनि बिहँसत श्रीरघुपति बोलत बैन । किहि कारण आगत इत लोहितनैन ॥ कर युगजोरि कहत तब लोहितअक्ष । देशदेश लङ्कापति पठव प्रतक्ष ४ हरप्रसाद परशा तुम भृगुपति जीत । वह रावण को दीजै राखि सुरीत ॥ करहिं समर्पण रावण रावरसीय । सब बिरोध मिटिजैहैं निरखहुहीय ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ बिहँसि बचन कहराम, दूत देखहु रत लोचन । पेखि प्रणय पौलस्त्य, सुमिरितव मति मोदत मन ॥ हरप्रसाद यह परशु, तदपि नहिं देनयोग है । दिये गलानी गहहिं, लङ्कपति लखहिं लोगहै ॥ सब दई बसुंधर द्विजनको, असुर रसातल रीजिये । निर्जित्य निशाचर लेय क्षिति, किमि बलभिद को दीजिये ६ ॥ दोहाछन्द ॥ दूत दशानन असुरपति, मम बचनन इमि बाच्य । हरप्रसाद वर परशु यह, लङ्काधीश अयाच्य ७ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ येते अन्तर बीच, पुरन्दर पठु पठवायो । शत्रुञ्जय रथ प्रवर, मातुली सारथि लायो ॥ रघुवरहू हनुमन्त, ध्वजाग्रारोपण दीन्हो । अति

उत्साह समेत, आप आरोहण कीन्हो॥तब लोहिताक्ष निष्क्रान्त तित, लङ्काधिप सन्निधि गयो। निज शिर नवाय कर जोरियुग, सब वृतान्त बरणत भयो॥ ८॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रलोहिताक्ष
रावणदूतसंवादोनामचतुश्चत्वारिंशोल्लासः॥ ४४॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ कह लङ्का शिखरस्थ लङ्कपुर कन्तहै। ध्वजपर सुतदशरत्थ कोन बिलसन्तहै॥ यह सुनि लोहितअक्ष बचन उच्चरन्तहै। परहां। प्रबल पराक्रमपुञ्ज बीर हनुमन्त है१॥ षट्पद छन्द। लोहिताक्षउवाच॥ हेलोल्लंघित सिन्धुग्रस्त, अंशुन मण्डलधर। सियबियोग सहराम, दैत्य उदघाटन पटुतर॥ निशिचर नायक नगर, निखिल निरदग्ध अचलचित। संजीवित सौमित्रि, औषधी अद्रि आनि इत॥ उपमा अनन्त हनुमन्त यह, जिहि मग अवर न अनुसरत। अतिप्रबल प्रभञ्जन पुत्र बर, रघुबरध्वज गज्जन क-रत२॥ कविरुवाच॥ मन्दिर मन्दोदरी, गयो रावण अति तूरण। बूझन लग्यो बिचार, चारु मति नयसंपूरण॥ बिनिहत राघव बि-शिख, बिबुधपुर करौं मैं। अथवा सीय समर्पि, राम संकष्ट हरौं मैं॥ मम मात्ररह्यो अवशिष्ट बल, कौन पक्ष है तोर प्रिय। सो सपदि सुनावहु स्वामिनी, धारण करिहौं हर्षि हिय ३॥ दोहाछन्द॥ बि-हँसि बदत मन्दोदरी, पहिले सुनी न एक। प्राणनाथ लङ्कापती, अब किमि भयो बिवेक ४॥ मन्दोदरिउवाच। षट्पदछन्द॥ दैत्यभ-गिनिको देखि, खरादिक निधन श्रवण सुनि। मातुल लख्यो बिनाश, ताल भेदन श्रुतिगत पुनि॥ कपिबर बालीदहन, बद्ध सुग्रीव सख्यसुत। जलधि तरन उद्यान, भङ्ग बध बिदित अक्षसुत॥ पटु पुत्र पौत्र परिवार जन, नष्ट भये कुलके सबै। कृतसेतु बिनि-

गत नीरसम, उर बिवेक आयो अबे ५ ॥ रावणउवाच । मनोहरछन्द ॥
धिक धिक इन्द्रजीत जाग्यो कुम्भकर्ण बृथा, स्वर्ग ग्राम लुराठन बि-
त्रच्छ भुजबीशहै । लाखन धिकार मोंहिं मेरे सुनि शत्रुहोय, तामें
तुच्छ तापस सहाय संग कीशहै ॥ सोहू अत्र आयकै प्रहारे कुल
राकसको, जीवतहै रावण निहारे नैन बीशहै। एक अङ्क शीशत्रार
पीसडारे यातुधान, बीसौबिसा अधिक धिकार दश शीश है ६ ॥
कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ सकरुण मन्दोदरी कहत लङ्केश है।
नहिं पावहु कछु शोक स्वभान सलेशहै ॥ त्रिया तदपि क्षत्रियाहु-
कमद्रुम दीजिये। परहां। समर मध्य ममनाथ हाथ लखि लीजिये ७
रावण बदत बिदीर्यमणिनु निज हीय है । तरुणम करुणानाहिं
किंचदपि तीय है॥ प्राणरङ्क नहिं पीय तोर जिय होत है। परहां।
तज लङ्का निशंशङ्क समर उद्योत है ८ ॥ कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥
गहि आयसु श्रीराम, सकल कपि भट निकसे हैं। लङ्का उत्तर मार्ग,
रुन्धि अति उर बिकसे हैं॥ उच्छंखलत्प्लुत्य, करत दृढ़गढ़ आरोहन।
शैल शिखर कर धारि, छटा छाहत छबि सोहन॥ दिगपाल कुलाहल
बहलमद,उग्र अवग्रह तारचख। देदीप्यमान दिशि बिदिश,दिशि
दशग्रीव उदग्रीव लख ९ ॥ कविरुवाच ॥ रावण रामनियुद्ध, निहारत
रुद्र निरन्तर। संवेष्टित कपिकटक, लङ्क अवलोकि दिगन्तर॥ उच-
रत मरुदादित्य, शम्भु शतमख मुख सुरवर । अनुसर्पत अनुदिवस,
समय जिहिंपुर दुवारपर ॥ वह समाक्रान्त बानर भटनि, दशग्रीव
नगरी रुचिर। अति लखहु कालमहिमा प्रबल, उर आवत अच-
रज अचिर ॥ १० ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीका-
रामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीरामचन्द्रबानर
कटकलङ्कासंरोधोनामपञ्चचत्वारिंशोल्लासः ॥ ४५ ॥

कविरुवाच । चन्द्रायणाछन्द ॥ प्लवगाधिप सुग्रीवमुक्त बहुबृक्ष है । सपदि पाय संघट्ट लङ्कपति वृक्ष है ॥ प्रकटत पावकपुञ्ज भूमिरुह दहतहै । परहां । दिपत दवानल सदृश समरमधि महत है १ रावण निजगिरि शिखर उखारि प्रचार है । पिष्टपानि चयपरस कुण्डजल धार है ॥ निर्झर पयजनु होत, पिण्ड जम्बाल है । परहां । लगत हृदय सुग्रीव सुमन मनु माल है २ उतपाटित कैलासभये भवतुष्ट है । इहि उतपाटन किये तथा सन्तुष्ट है ॥ रणमधि रक्षा करहिं देव करिकै दया । परहां । इहि कारण लङ्केश शिखरगिरि करलिया ३॥ षट्पदछन्द ॥ रावण होय सक्रोध, रथारोहण किलकीनो । भेरी मर्दल शेष, ताल निकरस्त्रनमीनो ॥ काहलखनिस्सान, श्वान परिपूर्ण कर्णकिय । दशकन्धर युद्धार्थ, नगर निकसत बिकसतहिय ॥ माणिक्य मौलि मञ्जुल महा, यशोदीप दीपित दृशत । बिधि कर्म वश्यजु अवश्य उत, लङ्कपाल अति उल्लसत ४ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ परिमिति पवन प्रचार मन्द रबिताप है । निकस्यो जब मग गगन निशाचर आप है ॥ प्रणमत सब सुरसंघ नम्रहुइ अङ्ग है । परहां । थगित सरित गति भङ्ग उतङ्ग तरङ्ग है ५ ॥ षट्पदछन्द ॥ जब लङ्का भट सुभट, शरासन शिखर नील थित । क्रोध आशुगिरि प्रस्नव, सहित पर्वतकर बिलसित ॥ मृगतृष्णा जलयुक्त, अचल अविलोकि चकित चित । दिग मण्डल जुपदेव, सुमति उत्प्रेच्छ करत तित ॥ बहु बृन्द बृन्द बृन्दारका, बाणी बिपुल बदन्त है । धनुभृङ्ग भृङ्ग तदुपरिगिरी, तत्र जलधि बिलसन्त है ६ राम मध्य साश्चर्य, सपदु भट मुख अवलोकत । व्यथा सहित सुर तौर्य, शान्तरस तत्र बिलोकत ॥ रघुबर युधि साशङ्क, कपिन मधि सबिनय सरसत । साश्रुपूर सौमित्रि, सभय अनिलज मधि दरशत ॥ लखिभ्रात कृत्य

सामूयहुव, आत्मकृत्य सत्रप लखत। दशबक्क बक्र चयचक्र सब, भिन्न भिन्न भावन रखत ७ दृढ़ बांधे दशतूर्ण, शक्रहय सबकेश करि। धुनत बाम दोर्दण्ड, धनुष दश बिपुल बेगधरि ॥ दक्षिण भुज दश बिशिख, सुतीक्षण आददानहैं। छोड़त क्रीड़ा करत, प्रकुप्यत यातुधान हैं ॥ अभिभवत भूरि प्रसरत अमित, गर्जत तर्जत ओघअति। खिद्यन्त निरन्तर बदन श्री, रणप्राङ्गण मधि अवतरति ८ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ समराङ्गण श्रीराम निशाचर कन्त हैं। तरुण कुण्डली भिन्न बपुष अगिनन्त हैं ॥ करीकुम्भ संलग्न ललति बिलसन्त हैं। पवै हेकामिनि कुचयुग परस यथा सोवन्त हैं ९ ॥ कविरुवाच। सोरठाछन्द ॥ गगन गगन परमान, सागरसम सागर लसत। रावण राम समान, संगर रावण रामकौ १० ॥ षट्पदछन्द ॥ सारनाम क्रव्यांद, बीर हयचढ़ि उत आवत। अश्वमध्य हुव खण्ड, चढ़्यो पूर्वार्द्ध सिधावत ॥ पश्चिमार्द्ध युवराज, तुरङ्गम गह्यो क्रोध कर। कीनो प्रबल प्रहार, असुर शिर ऊपर सत्वर ॥ निज शिबिर बीच पहुँच्यो न वह, अङ्गद ताड़ित महि पर्यो। शिव शिव शिव अति संकट बिकट, चमू निशाचर उच्चर्यो ॥ ११ ॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासे साराहतमिचरबधोनामषट्चत्वारिंशोल्लासः ॥ ४६ ॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ निशिचर महद शरीर, अल्प बपुवानर बिलसत। किहि प्रकार है बिजय, राम संशय हिय हुलसत ॥ कह अङ्गद करजोरि, कलश शिशु पियो अम्बुनिधि। अद्री परम उतङ्ग, पुरन्दर पपछिद जिहिबिधि ॥ अति प्रथुल बपुष किहि काजके, कोणपकुल असमर्थ उत। निजनाम धेय ध्रुवराम इत, लसत सकल सामर्थ्ययुत १ ॥ कविरुवाच ॥ रावण रघुबर निरखि, बचन उच्चरत हैं

ऐसे। ताटक ननु तियमात्र, रामशुचि द्विजहो तैसे॥ भीति भवन मारीच, हिरनबालीहो बानर। बृथा बिकत्थन करत, काहि काकुत्थ अधिकतर॥ कहु कौन बीर बर बिजय किय, रखत गर्व दोर्दण्डकर। कोदण्ड अबै आरोपिये, तोरमोर ह्वैहै समर २॥ कविरुवाच॥ अङ्गद उत्तर देत, अरे सुन निशिचर नायक। बन्द्य महज्जन चरित, कछू नहिं संशय लायक॥ सुन्दर तिया किय दमन, तौन दरशात कुण्ठितयस। अरु जिहिंबिधिहो बालि, ताहि तुम जानत जियजस॥ पुनि सुनिबो चाहत औरहू,बिदित बीर जय बिमलगिर। खरखण्डन दूषण दलन किय, त्रिशिर कियो रण भिन्न शिर ३॥ कविरुवाच॥ सुनि अङ्गद के बैन, वचन रावण पुनि उच्चरत। रे रे मानव राम, समर लङ्कापति प्रचरत॥ शङ्करगिरि कैलास, किया कन्दुक क्रीड़ाइव। मानत्र निशि दिन दर्प, जासु देवेश्वरहू दिव॥ असुरान्तत सुन्द सुन्दरिकदन, शाखामृगपति अन्त कृत। जाघोस करहु धिय धीरधरि, दोर्दण्ड कोदण्ड धृत ४॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द॥ तदपि न रावण हनत सदपि श्रीराम है। आनन अम्बुज नम्र कियो अभिराम है॥ जब किंचित थित लज्ज सहित सियकन्त है। परहां। बिहँसि तबै लङ्केश बचन उचरन्त है ५॥ रावणउवाच॥ तव पूर्वज अनरण्य हुतो बरजोरहै। कीन्हो ममकर कदन जंगमधि घोरहै॥ तिहि सुमिरण करि व्यथित परम सन्ताप है। परहां। जिहिते लज्जावन्त होत अति आप है ६॥ श्रीरामउवाच। षट्पदछन्द॥ कहतराम निश्शङ्क, निशाचर नीच निहारहु। कहालज्ज अनरण्य, भूप निज जिय निरधारहु॥ जय अथवा ह्वै मरन, शूरवीरन को रनमें। तिहिको हरषरु शोक, तनक लावत नहिं मनमें॥ बन्धनागार अर्जुन नृपति, बहुबासर रावण रये। बड व्यथा होत इहि हेत तित,

मुनि पुलस्त्य भिक्षुकभये ७ ॥ चन्द्रायणाछन्द ॥ ममभुज भृगुपति बिजित जासु बध कीन है। तिहि हैहय के हाथ बन्ध तुम लीन है॥ सङ्कट कारागार सहे अगिनन्त है। परहां। तव सन्मुख धरि शस्त्र सुलज्जावन्त है ८॥ कविरुवाच ॥ रावणहिया बसन्त सुसन्तत सीय है। मोर निरन्तर ध्यान जानकी जीय है॥ मम उर निबसत सकल सृष्टि संघात है। परहां। हनत न शरहिय असुर डरत जग घात है ९॥ षट्पदछन्द॥ रावण रोष निहारि, बिहित अहंकार आपउर। द्रुतदृढ़ संगर बद्ध, दिक्ष बिभु सज्ज भये तुर॥ शरणागत भयहरण, बिरदबर बिलसत अबिरत। छायो बिपुल उछाह, प्राण तृण तुलित बिशेषत॥रघुबंशराज महाराज सुर, अवध नगर अधिराजहै। बधकरन काज असुरेश को, रणमधि बिबित्र बिराज है १०॥ कविरुवाच। दोहाछन्द ॥ प्रिया बिरह अर्दितप्रभू, लहत नाहिं रति तत्र। सत्यरम्यरमनीयता, थिरमन बिलसत यत्र ११॥ कविरुवाच। मनोहरछन्द॥बाण इहि ताटकाके शोणित सनान कियो, भगिनी के कानन प्राण प्राणायाम कीन्हो है। दूषण त्रिशिरखर आहुति अशेशदई, हिरनमारीच बलिदान बेग दीन्हो है॥ आचमंन आन्योहै अनन्त अम्बु अम्बुनिधि, भोजनावकाश अबै चारु चितचीन्हो है। मार्गण क्षुधित मोर मार्गन करत तोर, आमिष असुर लङ्कनाथ चहै लीन्हो है १२॥ दोहाछन्द ॥ चितचाहत जो संधितौ, सीय समर्पहु सद्य। नातर ममनाराच तव, आमिष भखिहैं अद्य॥ १३॥

इति श्रीपिपलोद्पत्तनाधिपअलरायसजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचिते श्रीवरबिलासेश्रीरामचन्द्र रावणसंवादोनामसप्तचत्वारिंशोल्लासः॥ ४७॥

कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ तउरावण सावज्ञ बचन उचरन्तहै।

प्रकट प्राण परित्राण हेतु वर्णन्तहै॥ मूर्खनको मूकत्व सभा मधिहै यथा। परहां। क्लीबन को रणबीच संधि बच है तथा १ ॥षट्पदछन्द॥ इमिकहि गगन बिलोकि, दशानन बदत बचन है। रे रे काल अकाल, लब्धतव बिभव रचन है॥ हूजै स्वैरसकाम, शम्भु भूषय तू तन तव। शिरोमाल्य निज अङ्ग, भूरि भूषित भ्राजहु भव॥ रचिये बिरञ्चि सृष्टि अपर, लङ्केश्वर कटिबद्ध है। करबाल गही भीषन भुजन, युद्धकाज सन्नद्धहै २ ॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ पुनि करि रामाच्छेप सुनावत बोल है। मन्दिर मधि मैथिली अलाप अमोल है॥ रण दारुण मधि होय पलायन प्रान है। परहां। मधुर अधर मम गिद्ध करहिंगे पान है ३ ॥ कविरुवाच ॥ त्रिजटा शरमा दोय विमान बिठायकै। बैदेही लेगई चतुर चितचायकै॥ रघुवर रावण युद्ध बतावत सीयको। हरिहां। निमिनृपनन्दिनि नीक निहारत पीयको ४ चढ़ि लङ्काचल शिखर उच्च मन्दोदरी। निरखत सङ्गर शोभ निशाचर सुन्दरी॥ एकचरणथितभये अगाध समुद्र है। परहां। शोभा समिति समग्र निहारत रुद्र है ५ बरबिमान आरूढ़ बिबुध बहुबृन्दहै। अवलोकत संग्राम सकलसानन्द है॥ कालरुद्र सम रामकियो अतिकोप है। परहां। जनु भैरव संहार सुअद्भुत ओपहै ६ ॥ श्रीरामउवाच। षट्पदछन्द ॥ रे निशिचरपति नीच, करत अब तेरो चूरन। बाणासन शिर त्रिदश, दर्पहर गहिये तूरन॥ बेग बुझावत मोर, प्रिया बिरहागि बिलोकत। मन्दोदरि युगनयन, नीर करि तव अवलोकत॥ जो करनहोय करिलेहु सो, मनकी मन रहजायगी। लङ्केश रिंदगी जिंदगी, एकहि सङ्ग नशायगी ७ ॥ कविरुवाच। चन्द्रायणाछन्द ॥ इमि कहिकै श्रीराम लिये कर बान है। सो लखि मन्दोदरी लगी घबरान है॥ मन्दोदरिउवाच ॥ हुते बालतर

रूप तवै ताटकहती। परहां। अवै तरुणतम लखत कितक मेरो पती ८॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ आकर्षण किय धनुष, जबै रणमधि श्रीरघुबर। तवै बामभुज बदत, अहो सुनिये दक्षिणकर॥ दानदेन अरु लेन, मिलै मनभावन भोजन। अग्रहोत उहिं ठौर, अवै कृत पृष्ठ नियोजन॥ तबदाहन कह मोको न भय, बूझत निजस्वामी श्रवन। दशबदन बदनसब सहकदन, किमि इक इक करुणाभवन ६॥ कविरुवाच॥ दृष्टमन्त्र दिव्यास्त्र कुशिक, सुत शुचि सेवनकर। योद्धा भृगुपति बीर, भुजगपति भोग द्विभुजबर॥ बिभु दिनकर कुलकेतु, कुतक उत्तान दृगञ्चल। बहुमत रिपुकृत कर्म, कौतुकी रोम अचंचल॥ जो कर्मबश्य कर करिकरत, रावण रणमधि अवलचित। सो कर्म दोष दोर्दण्ड द्रुत, दाशरथी दरशात तित १० राघव करी प्रतिज्ञ, समरमुर्द्धनि ऐसी उत। रे रावण तव सहित, होयगो अर्क अस्तद्रुत॥ अस्तअचल अवलम्बि, भयो आदित्य समय जिहि। मन्दोदरी चकोर, बधू समहुइ औसर तिहि॥ जानकी चितचकई सदृश, समय भङ्गभयजानि जिय। अरुनिशाबीच निशिचरनको, प्रबल होत बल हेरि हिय॥ ११॥

इति श्री पिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतामन्दोदरी वचनवर्णनंनामाष्टचत्वारिंशोल्लासः॥ ४८॥

कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ कहत राम लङ्केश, तोर शिर बहुत बिलोकत। मिलत महामुद मोय, एकबध इक अवलोकत॥ बिनिपातित इकमाथ, कोप उपशान्ति कहौ किमि। निरखत नहिं निज निधन, भिन्न उच्छिन्न होत जिमि॥ निज छिन्न छिन्न मस्तक निरखि, बिलखंत दुर्नय निखिल फल। जग एकमत्थ के शत्रुते, दश मत्थनको शत्रुभल १॥ चन्द्रायणछन्द॥ इकशिर लखि उच्छिन्न अपर

इमि बदत है। माछिंधी माछिंधि गिरा मुख गदत है ॥ एकमत्थ अरिइने यहै नहिं लेख है। परहां। दुर्नयफल दशमत्थ परत सब पेखहै २॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द ॥ अति द्रुततर श्रीराम, बाण संघात घातहुव। रावण ताड़न व्यग्र, ग्रीव नहिं गिरनदेत भुव॥ छिन्न धनुष निस्त्रिंश, आदि प्रहरण करि कोपित। निज मूरध दशबदन, रामशर ब्रात दलित तित ॥ कर इकइक शिर गहि गगन मधि, उछरत भट भुजबीस भट। जनु अतिशय नरसंघटन में, बटा उछारत सुघर नट ३ बाण शाण उत्तीर्ण, समर प्राङ्गण मधि रघुबर। सम कलपान्त कृतान्त, लिये नव एक संगकर ॥ नवमूरध उच्छिन्न, किये पुनरपि नवीन लखि। है मुहूर्त्त चित चकित, बिपुल बिस्मय बिचहियरखि ॥ बिधि दियो वाहि बरदान यह, जब लौं छिन्न न मध्यशिर। उच्छिन्न कियेहू अन्यमथ, पुनि पुनि प्रकटहिंगे अबिर ४ कुम्भज मुनि संदत्त, बिदित ब्रह्मास्त्र प्रबलतर। अभिमन्त्रितकरि बाण, प्रहारयो हृदि दशकन्धर॥ शोणित शोण शरीर, बिशिख बर पञ्चबाण गहि। अतिशय सत्वर तीक्ष्ण, धार शर भो प्रबिष्ट महि ॥ रण रावण बिद्रावण बिबुध, सकल लोक रावण रहा। भौ पतन तास दुंदुभी प्रबल, भयो मोद मङ्गल महा ५ सब सुन्दर सुन्दरी, सहित मन्दोदरि परिबृत। गलदबिरल जलधार, नयननीरज पुरनिस्सृत ॥ सियपति निजपति बिरह, प्रतापानलहि बुझावत। त्रिकुटाचलते चपल, समरभूमी मधि आवत ॥ अतिकरत घोर फुतकारयुत, हाहाकार पुकार मुख। संप्राप्त महा निद्रापती, गिरीचरण चित अमित दुख ६ ॥ मन्दोदरिउवाच ॥ सुर सिन्धुर बर बधू, कुम्भ प्रस्फोटन निरत। बिलिखन बिजय प्रशस्त, बिश्व मञ्जुल मौक्तिक कृत ॥ बर्णावली बिचित्र, ललित ले-

लङ्क लङ्कापति। नाकान्तप्पुर सरस, सुन्दरी कलकपोल तति॥ बर विरचित तित काश्मीरका, पत्रांकुर शोभा अमित। तिंहि नाशक भुज भीषन प्रबल, भो किहिं विधि संगर शमित ७ हा लङ्केश्वर प्राण,नाथ जिय जीवन मेरे। मन्दोदरि पतिव्रता, बदन बहु चुम्बत तेरे॥ आलिङ्गन भुज भूरि, करत एकान्त कान्त जब। कहतहुते करिकौल, वहै सब बिसरिगये अब॥ बर लम्बोदर कल कुम्भथल, मौक्तिक मणि एकावली। करिदेहुँ तोहिं आवत अबै, करजदार निद्राभली ८ इककर करि कैलास, धरूो दूसर त्रिभुवन जित। अष्टादश अवशिष्ट, नाहिं आयो अवसर कित॥ भूरिभव्य क्रव्याद, बीर रणधीर महाबल। रिपु यह द्विभुज मनुष्य, तिया बिरहित बानरदल॥ अतिप्रबल देखिये देवगति, वह बिनिहत निज नगररन। बहु बृथा होत सामंग्रि सब, उलटि जात जब नियतिजन॥ ६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमन्दोदरी
विलापोनामैकोनपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ४६॥

कविरुवाच। मनोहरछन्द॥ बृष्णिकुल जाति जासु अग्रज कुबेर कैसो, कुम्भकर्ण भ्रात पुत्र इन्द्रजीत पायो है। आप दशमत्थ समरत्थ हत्थ बिंशति हैं, काम चारदैत्य रथ बिजयी बतायो है॥ लङ्क जैसो गढ़ दृढ़ परिखा पयोधि पूर, गोबिन्दजू दैव दैव दुर्बल दिखायो है। खोसि खोसि खायो खूब खीभि खीभि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षणमें खपायो है १ एक काल बीच जाने बिश्व की बिजय किथो, जाही भुजबीस ईश अद्रि को उठायो है। ताको अग्निदाह संसकार समै आयो अब, राम बिन आयसु सो कपिन रुकायो है॥ गावत गोबिंद अति आचरज आवतहै, अद्भुत अवश्य

काल महिमा बतायो है। खोसि खोसि खायो खूब खीझि खीझि सारो जग, कोशलकिशोर ताहि क्षण में खपायो है २ दुरग त्रिकूट तासु परिखा पयोधिपूर, योधयातुधान धन धनद भरायो है। संजीविनी बिद्या हृद्य जाकेहि मुखाग्रगत, कालबश ताकोहू बिनाश दरशायो है॥ जन्तुनको पूर्वकृत कर्मविपाक महा, बिषम बिचेश बिश्वबीच बिलसायो है। जोई शिवशीश दशशीश शीशमेघ हुतो, शिव शिव सोई गिद्धपायन लुठायो है ३ ॥ कविरुवाच। लक्ष्मीधरछन्द ॥ लक्ष औ अक्षहन्ता जहां जायकै। मानतैंयानमें जानकी लायकै॥ स्वामी श्रीरामके सामने सोरखी। लज्जमें मज्जसी सीय शोभालखी ४ ॥ मनोहरछन्द ॥ लङ्काते कलङ्कहीन मैथिली मँगायराम, मारिदशमत्थ दशरत्थ सूनु सरसे। बिपुल बियोग बह्नि ज्वाल जाल व्याकुलहै, बिग्रह बिशेष मैनबारि बुन्द बरसे॥ नाहिं अध ऊरध औ तिरछे निहारत हैं, मुकुलित दृगम्भो द्वन्द्व दिव्य दरसे। थितहै समाहित से चित में चकितभये, नाहिं जित तित में बिलोकत स्वपर से ५ ॥ कविरुवाच। बरवैछन्द ॥ निजकुल परिजन लज्जामज्जित होय। सजल जलज इव लोयन दरशत दोय ६ जकित थकितसम सजन गहत गलान। उहि अवसर मधि उचरत बच हनुमान ७॥ हनुमानुवाच॥ मात मैथिली करिये ललित ललाम। प्रभु पुनीत पदपङ्कज पटुलप्रणाम ८॥ मनोहरछन्द॥ भंगुरभयो है अङ्ग चापके अलिङ्गनुते, उपमा अनङ्गकी अभङ्ग सरसतहै। न्यस्त एकहस्त अक्ष अम्बुज ललितलसै, दूजेकर बीच शरपञ्च दरसत है॥ बाणव्रण अङ्कित बिराजै बीर राम बपु, मनौं बिजैलक्षि के नखच्छत लसत है। लङ्काभट मथिकै भये हैं थित प्राणनाथ, एरी मात क्यों न पदपद्म परसत है ९॥ कविरुवाच। बरवैछन्द॥ बायुतनय सुन्दर

बच सुनि सुनि सीय। चहचितही मधि चुनि चुनि पुनि पुनि पीय १० ॥ अथ मैथिलीमानसविचारः। मनोहरछन्द ॥ तनुभूत तीनताप छेदन छपाकरसो, क्रोधानल अम्भोधर उपमा अनूप है। सार औ असारके बिवेककौरु शोकहूको, भ्राजतभवन हर्ष बीजाश्रय कूप है॥ कालव्याल बिषको गोबिन्दहै गरुड़मणि, धैर्य बृक्षबनभूमि मोषप्रद रूप है। सुकृत समूहते समागम घटत रांम, बिना पुण्य मिले नाहिं औधपुर भूप है ११॥ दोहाछंन्द। कविरुवाच॥ इमि उर अन्दर आनिकै, मैथिलिमत्थमलिन्द। रघुनन्दनपद द्वन्द्व को, गहन चहत मकरन्द॥ १२॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेमैथिलीमानस विचारवर्णनंनामपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५०॥

कविरुवाच। चन्द्रायणछन्द॥ अलग होय श्रीराम बचन उचरन्तहैं। सुनहु महज्जन सकल सुसन्त महन्तहै॥ श्रीरामउवाच॥ यद्यपि प्रिया पतिव्रता बिदित बिन दोषहै। परहां। दिव्य शपथ बिन तदपि न मन संतोषहै १ पर मन्दिर मधि सिया रही चिरकाल है। दिव्य शपथ बिन परस करत किमि हाल है॥ यह निश्चय बच सुनत बिरञ्चादिक सबै। अरिहां। अम्बर ते अवतरत त्रिदशततिते तबै २॥ दोहाछन्द॥ प्रिया बिरह अर्दित यदपि, तउन लहत रतिराम। रम्यन की रमनीयता, सत्य स्वच्छधिय धाम ३॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ जलदि जाय जानकी, ज्वलित अति जातवेदजित। पावक पावक परम, बिनन्ती बर बितरत वित॥ मन बच तनु करि मोर, स्वपन जाग्रत मधि अविरत। भयो होय पतिभाव, राम बिन अन्य पुरुषप्रत॥ तो दह दह दह मम देह द्रुत, दहन दुसह द्युति दाप है। सब सुलालित फल्ल भगीन के, कर्म साखि इक आप है ४॥

दोहाछन्द॥ दुहिता दिव्य विदेह की, इमिबनि बचन बिशेश। कीन्हो पूरण प्रज्वलित, पावक पुञ्ज प्रवेश ५॥ मनोहरछन्द॥ कालानल जीहज्वाल सहितहै लीलासर, शोभित सरोजसीय बदन बिशुद्ध है। हर्ष औ अमर्षसनें बानरके बृन्दबहु, फूफूत्कार शब्द सर्ब अम्बर निरुद्ध है॥ परम प्रबुद्ध महाराज राज रामचन्द्र, बुद्धिके निधान जियजानी अबिरुद्ध है। चारहू बदनते उचारतहैं चारमुख, पतिव्रत सीय शुद्धशुद्ध शुद्धशुद्ध है ६॥ श्रीरामउवाच। दोधकछन्द॥ शुद्ध सिया मन कायक वायक। देवनते बरणे रघुनायक॥ आननको उपमान अतुल्लित। पङ्कज पावक पुञ्ज प्रफुल्लित ७॥ कविरुवाच। षट्पदछन्द॥ दिव्य शपथकरि सिया, प्रबल पावकते निकसी। बहुल बरानन बिभा, बिदित बारिजवत बिकसी॥ बनिता बिपुल बिनोद प्रीति प्रकटित प्रसेदकन। आवृतास्य श्रीराम, निकट निवसी समोद मन॥ भलभक्ति भाव भ्राजित हृदय, करत न पद पङ्कज परस। करकङ्कण मणि पुनिरमणि, सममत प्रकटहु सुन्दरिसरस ८॥ मल्लिकाछन्द॥ गौतमांगना प्रकार। चारु चित्तमें चिहार॥ जानकी रही निहार। बार बार बार बार९ हीय होत है सहर्स। पै न कीन पादपर्स॥ भाव भाम हेरि राम। चित्तभो अनन्द धाम॥ १०॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामाविरचितेश्रीवरविलासेमैथिली दिव्यशपथवर्णनंनामैकपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५१॥

कविरुवाच। मल्लिकाछन्द॥ आइकैइतेकबीच। नाथ रामके नगीच॥ हाथ जोरि होय दीन। बीनती सुकण्ठ कीन १॥ सुग्रीवउवाच। हरिगीतिकाछन्द॥ लङ्केश कामिनि नेकनामिनि देह दामिनिसी दिपै। जननी पुरन्दरजीतकी निधिनीतिकी क्षितिनाछिपै॥ बृन्दारकावलि बन्दिता मयनन्दिनी वन्दनकरैं। सेवित सुरासुर सुन्दरी

मन्दोदरी बिनतीरैं २ ॥ बरवैछन्द ॥ मन्दोदरी निहोरत युगकरजोर। बिनयकरत गतकरिये अवधकिशोर ३ ॥ कविरुवाच ॥ सुनिसुग्रीव सखाके बचन रसाल। बोले दिनकर कुलमणि दीनदयाल ४ नम्रा-ननंह्वै रघुबर बचन बदन्त। महभागिनि मन्दोदरि कहा कहन्त५ धन्य जनक रघुबर तव जननी धन्य। धन्यबंश नहिं निरखत नारी अन्य ६ साधु साधु सीताबर बिनवत तोय। अब आगे बिभु मेरी कसगतिहोय ७ देखि दशा अतिदुर्बल भरिजलनैन। कृपासिन्धु करुणाकरि बोलत बैन ८ ॥ श्रीरामउवाच ॥ पतिसँग सती न होनो निजकुल धर्म्य। भव्य बिभीषण भर्त्ता हरहर रम्यं९ अचल राज लङ्का-चल करु चिरकाल। प्रबल बिभीषण भर्त्ता तव मतिपाल १० ॥ कविरुवाच। पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर रघुबर चित्तचीन। असुरेश बि-भीषण भक्तिलीन ॥ किल कृपासिन्धु बिभु बन्धुदीन। लङ्काधिपत्य अभिषेक कीन ११ तदनन्तर बर पुष्पकबिमान। जानकी युक्त चढ़ि किय पयान ॥ संग्रामभूमि लागे दिखान। पेखहु मम प्यारी पञ्चप्रान १२ इहि ठांह भयो फणि पाशबन्ध। पुनि अत्र नचे कै-यक कबन्ध ॥ बिधिशक्ति बक्षलक्ष्मण बिदार। इत आयो हनुगिरि द्रोणधार १३ शर दिव्य लषण डरकरि सभीत। प्रापत लोकान्तर इन्द्रजीत ॥ कीन्हो इत कण्ठाटविनिकृन्त। केनापि रात्रिचरपति असन्त १४ उपकृति हनुमत बरणत अशेष। जिहिकरि रावण भो भय बिशेष ॥ प्रहरत यह सुनि प्रज्वलत पाप। कृश कपि इत लज्जितभयो आप १५ लीलालङ्घित वह बाहिनीश। यह सुनत घुमावन लग्यो शीश ॥ सुनि रामदूत तनु छयो ताप। कलुषत ईर्षायुत भयो आप १६ भोप्रिये तोरहित हनूमन्त। प्रापतकिय दशमुख दुख अनन्त ॥ असुरेश अवस्था कौन कौन। क्षण क्षण मधि

पत जौंन जौंन १७॥ कविरुवाच ॥ सह बिस्मय सिय बूझत सु-
गाथ। इतआये किमि तुम प्राणनाथ॥ तब राम सहर्षित हीय होय।
बृत्तान्त सुनावनलगे सोय १८॥ श्रीरामउवाच ॥ उपकार सकल सु-
ग्रीव केर। हरषत हौं निज हिय हेरहेर ॥ कान्ते निवास कान्तार
कूर। प्रियजन बियोग उर आधिभूर १९ धनुमात्र त्राणरिपु मनुज
भक्ष। तसबास सिन्धु दाहिने कक्ष ॥ घन अघटित अघटित हुती
घात। इत अरिप्रतिकृति की कहा बात २० रावण हरिगो बनराम
तीय। इतनी रहिजाती कथा सीय॥ सुग्रीव सखा मम नाहिं होय।
मिलतौ किमि बदला लैन मोय॥ २१॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीबूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्यकवि
टीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेसीतारामचन्द्र
संवादोनामद्विपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५२॥

कविरुवाच । षट्पदछन्द ॥ इहि अन्तर मधि इन्दु, उदय लखि राम
कहतबच। देविदोष दिनमणी, बियोगी मनुजयहै सच॥ दीक्षा-
मणि शृङ्गार, मदन अहिमस्तक मणिवर । चूड़ामणि चण्डीश,
कामतिय काञ्चिमणीरर॥ तिमितारा मौक्तिकहार मधि, नायक-
मणि बिलसन्त है। तरुणीचकोर चिन्तामणी, उपमा याहि अ-
नन्तहै १॥ कविरुवाच । पज्झरीछन्द ॥ इकटक निरखत निशिनाथ
शीत। प्राचीन बिरह बिभु व्यथा भीत॥ करयुग मूंदें दुइदृग स-
लील। कीन्ही लीला कुतुकाक्षिमील २॥ प्रश्न ॥ मैथिली के नयन
श्रीरामचन्द्र ने क्यों मूंदे॥ याको उत्तर॥ पहले तितदण्डक बिपिन
बीच। मांग्यो हो मैथिलि मृग मरीच॥ मांगहि मृगाङ्कमृग लखि
अयान। ताको करिहौं का समाधान ३॥ कविरुवाच ॥ इहि अवसर
सबजन निशाजान। सुखपूर्बक सोये यथाथान॥ परभात बिभी-
षण उतै आय। अभिबन्दन कीन्हो शीश नाय ४॥ बिभीषणउवाच।

षट्पदछन्द ॥ उपकारक अम्बुधी, सदा सेवित अरामगृह । वरबिक्रम
रघुबंश, कथा तिहिबीच थली यह ॥ देवछिन्न दशमत्थ, मत्थदश
अवलि अत्र है । शतमख दशशत नयन, मुदित अतिहोत यत्र
है ॥ इमि इकइक शिर शत शत नयन, प्रभु प्रमुदित कीन्हे परम ।
लङ्कानिवास किमि सुखद है, जहां अमित आसुरधरम ५ ॥ कविरुवाच ।
पद्धरीछन्द ॥ तदनन्तर बिभु ततकालयोग । चामरछत्रादिक राज
भोग ॥ संभाव्य बिभीषण प्रेमठान । पुरअवध सिधावन किय पयान ६
सुग्रीव बदत भो सुनहु देव । रणभूमि दिपत यह दारि तेव ॥ बहु
बाजिव्रात खरखुर प्रहार । इत भये भूरि बिभु बारबार ७ जिहिं रज
करि छायो आसमान । कलकण्ठ कबूतर जासमान ॥ करिकुम्भ
निकर भो मदस्राव । घनवृष्टि सदृश अति दुसहद्राव ८ बहु ठौर
ठौर महँ मची कीच । सन्तत इहि संगर अवनि बीच ॥ मन्दानिल
परिमल मिलितजास । अद्यापि सद्यइव रण प्रकास ९ इमि सुनत
बिमल सुग्रीव बैन । चितमधि रघुनन्दन चढ़्यो चैन ॥ शुभ सेतु-
बन्ध किय कज्ज उत्त । बैदेहि बदतभो अज्ज उत्त १० प्रिय प्राण-
नाथ रघुबंशकेतु । तुम कित करवायो वहै सेतु ॥ चित चकित होय
इत उत चिहार । इतकिय उतकिय इति कह निहार ११ कित
किय कित किय कहि बारबार । बूझत बैदेही बहुप्रकार ॥ पट तानि
लियो मुसकाय मन्द । तब सेतु बतायो रामचन्द १२ आनन
बैदेही पूर्ण चन्द । लखि सिन्धु भयो आनन्द बृन्द ॥ शुभ सेतु
दाबिआयो उफान । इहिं हेतु भई नहिं तासभान १३ घुंघटपट मुख
शशि छिप्यो अत्र । अम्बुधि आयो निज थान यत्र ॥ इहि हेतु
सिन्धु मधि बहे सेतु । नहिं लख्यो लख्यो रघुबंशकेतु १४ ते दीसत
हैं सिय सेतु शैल । औषध प्रकाश जित नाहिं तैल ॥ बिन्ध्यस्त प्रथम

निशि निशि समूह। बानरन लगहि कपि त्रिमल व्यूह १५ गिरि सिन्धु सलिल मधि किय समान। मुखदरी कियो कीलालपान॥ द्रुत द्विगुणित निर्झर झरतजात। पयकरि पयोधि पूरत पिखात १६ मैनाक बन्धुतें भो मिलाप। चुव प्रौढ़प्रीति चष अश्रुआप॥ कपि शिबिर नीर थित निरखि मोय। अगली सब बातें स्मरण होय १७॥ शिखरणीछन्द॥ जबै दूरापाती बिबुध युवती नैन सुगहा। सरिद्भर्त्ताहारावलि बलय शोभा किय महा॥ तबैये माणिक्य स्फटिक कङ्काश्मनिसनो। अशून्यात्मासेतू बिलसत महानाटक मनो॥ १८॥

इति श्रीपिपलीदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितकवि टीकारामाङ्कजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेनिमिनन्दिनी रामचन्द्रसंवादोनामत्रिपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५३॥

कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ इमि बर्णत बर्णत शोभसेतु। पहुँचे निजपुर रबिबंशकेतु॥ सब मर्कट भट शुचि सिय समेत। मग मग मधि अति आनन्द देत १ सन्मुख भरतादिक अखिल आय। अभिबन्दि अंघ्रि लीन्हे बँधाय॥ मुनिराज पट्ट अभिषेक कीन। सिय संयुत श्रीबर शोभ लीन २ हर शिर थित तजि शशिकला एक। सब लोकपाल अवली अनेक॥ उन उत्तमंगिबर अलङ्कार। मणिगण बटोरि काञ्ची प्रचार ३ धारी कटि तटसों सिय सयान। सिंजित मञ्जुल गिर करत गान॥ बिक्रम आडम्बर हेर हेर। लज्जत नहिं गज्जत बेर बेर ४ जिहिं तीनलोक छज्जत प्रताप। अरु भुवन चतुर्दश बिदित आप॥ यश जूह जासु जानत जनेश। अस राम अमल अभिधान वेश ५॥ कविरुवाच। तोमरछन्द॥ करिकोप अङ्गद आय। कपि ओघते अलगाय॥ उचस्यो बकारि ककारि। निज बालधी फटकारि ६ तिहुँलोक के तुम नाथ। रघुनाथ तव बच

माथ ॥ मुहिं आप आयसु दीन। तस सबै कारज कीन ७ नित हीयमें लिय हेर। नहिं छांड़िये पितु बेर ॥ सुनि लेहु श्रीरघुबीर। अब हूजिये रणधीर ८॥ षट्पदछन्द ॥ सह सुकण्ठ सौमित्रि, श्वसनसुत आदि सुभटयुत। आवहु यह रणरङ्ग, रसा दरशावत बल उत ॥ निरपराध मम जनक, हन्यो तुम ताको फल अब। प्राप होहुगे आप यहां अबिलम्ब सपदि सब॥ करि याद बापको बैर बड़, इकक्षण धिय धीर न धरौं। दोर्दण्ड दूसरो लाउँ ना, इक कर करि मन्थन करौं ६ समर प्रतिज्ञा परम, महत सुनि अङ्गद आनन। क्षोभित अति कपि चमू, राम लक्ष्मण सहसानन ॥ अनपराध बध समझि, अखिल अनुकम्पा आई। ह्वैगइ गदगद गिरा, प्रचुर पुलकावलि छाई॥ सौमित्रि तबै करजोरि युग, तारासुत सन्मुख गये। अपराध क्षमहु इमि उचरि बच, उर अनुकम्पांकित भये १० भई गिरा आकास, दास ह्वैहै बाली वह। राम होहिं मथुरावतार, निज सब परिकर सह ॥ सो हनिहैं उत इन्हैं, आप निज बदला लैहैं। अनुचित कृत जो कर्म, प्रभू ताको फल पैहैं॥ असबाणी सुनि अम्बर उदित, उर अङ्गद प्रमुदित भयो। पुनि सकरुणं लखि रामादि सब, अबिनय तजि सबिनयरयो ११॥ पद्धरीछन्द ॥ ह्वैयगो पितृबध प्रतीकार। सानन्द भयो ताराकुमार॥ युग हाथ जोरि तजि कोप तत्र। आयो इतमें रघुराज यत्र १२ अति ह्वै सबिनय नुति करत राम। सुनिलेउ दयानिधि धर्मधाम॥ जिम जिनके तव गुण परत कान। तिन तिनके मस्तक डुलागान १३ चतुरानन चित मधि यह बिचार। इक शिरप्रति युगं श्रुतिकिये सार॥ अहिराजबरानन सहस चीन। चहिये द्विसहस तित इकन कीन १४ गुणग्राम राम सुनिहै जु शेष। डुलिहै तब उहि आनन अशेष॥ मस्तकै जिहि सब ब्रह्माण्ड भार। शिर कम्प भये ह्वै भंगसार १५

यह अभिप्राय बिधि उरसि अस्ति। संसार रहो सब सदा स्वास्ति॥
इहिहेत बिधाता बुद्धिमान। सहसानन किय नहिं एक कान॥१६॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ
कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेतारातनय
स्तवनवर्णनोनामचतुःपञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५४ ॥

कविरुवाच। पद्धरीछन्द॥ तदनन्तर नुति किय हनूमान। सुनि लेहु राम करुणानिधान॥ बरबिनय बदत बिभुयुत बिनोद। त्रय टूक होतहै पीलसोद १ आनहु उहि कच्छप अधोपात्र। अरु मध्य दण्ड अहिराज गात्र॥ ऊपर भाजन भलभूत धात्रि। मच्छर मोहादिक महारात्रि २ शुभ सिन्धु सकल तित तैलपूर। बरमेरु बर्तिकाहे जरूर॥ चण्डांशुरोचि उहिं अर्चिआन। कज्जल अम्बर श्यामतामान ३ अरिओघ अमित उपमा पतङ्ग। इत आय करत निज अङ्गभङ्ग॥ रावर प्रताप प्रभु पटु प्रदीप। बिख्यात निरन्तर सकल द्वीप ४॥ अथ कीर्तिवर्णनम्॥ कैलासनिलय शिव सखा स्वच्छ। उपयेशन थल हिमिगिरि प्रतच्छ॥ स्वर्नदि जिहिंगृह वापिका रूप। चन्द्रोपल दर्पण अति अनूप ५ क्षीराब्धी नवपूर्त्तक निहार। शुचि शेष देह दीपति चिहार॥ करि तितंटाककिल कोशलेश। बिस्तार जासु बहु देश देश ६ दशबदन दमन सिय रमण राम। कीरति हंसी तव धाम धाम॥ भ्रम भूरि सकल पाई न धाप। सब लोक होय बिधि लोक प्राप ७ तित ब्रह्महंस को भयो सङ्ग। गर्भिणि है आई ब्योम गङ्ग॥ बिश अंकुर वर कुन्दावदात। जायो सुत हिमकर नभ दिखात ८ श्रीराम राम शृणु महाबीर। हम किमि गुण बर्णन करैं धीर॥ कलकित्ति कामिनी भब्य भार। कस्तूरि तिलक सम नभ बिसार ६ निवसति नित प्रति तव निलय लच्छ। पुनि बचन बीच सरसुती स्वच्छ॥ किहि कारण कीरति कुपित कन्त। नित भ्रमत

रहत दशहूँ दिगन्त १० दोर्दण्ड शुण्डि डिम डमतकार। जिहियुक्त प्रतापानिलज्वार॥ जर्जर कीरति पारद घटीजु। फुटि बुन्द बृन्द अवली अटीजु ११ भोगेन्द्रकितक तारक कितेक। कति क्षीरसिन्धु प्रालेय केक॥ कति पाञ्चजन्य कति करक कुन्द। कर्पूर कितक शशि कितक बुन्द १२ अत्युक्ति अकनि जिन कुपित होहु। मत मानहु मिथ्या बचन सोहु॥ तव तरुण प्रतापानलज्वालं। सोखित भवसागर जल बिशाल १३ पुनि पूरित अरि तिय नयन धार। अति खार सलिल भो इहि प्रकार॥ कोशलकिशोर को यश अपार। बहुबिबुधबृन्द पावें न पार १४ सबिता खद्योतद्युतिमातनोति। जीर्णोर्णनाभि गृहशशी ज्योति॥ मच्छरसम तारागण अपार। इमि बरणत नभ तव यश बिहार १५ अम्बरअनेक भ्रमरायमान। इहिबिधि अनन्तयश जूहजान॥ मुद्रित मुखवाणी रही मोर। रघुबर बर महिमा महत तोर १६ सानन्द होय दिगबंधू बृन्द। गिरि मेरु उलूखल किय स्वछन्द॥ सुरगङ्गा मञ्जुल मुसललीन। तव कीरति शाली निचयचीन १७ क्रीड़ित कीन्हो बहु बार बार। तिंहि राशि यहैं हैं गिरि तुषार॥ ताकेगण तारागण अनन्त। प्रद्योत सुधांशु प्रांशूभनन्त॥ कविरुवाच। दोहाछन्द॥ इहि प्रकार निज हिय हुलासि, तवन कियो हनुमन्त। अङ्गद अमित अनन्दयुत, रघुबर भुज बर्णन्त॥ १८॥

इति श्रीकविगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेश्रीमद्धनुमत्कृतश्रीरामचन्द्रस्तबनवर्णनोनामपञ्चपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५५॥

अङ्गदउवाच। षट्पदछन्द॥ रावण यश शशि रबि, प्रताप धनु शिवमद अहिपति। चारहु थित एकत्र, प्रलयकारक अरिष्टअति॥ तासुं शान्ति शुचिहेतु, खड्ग तव तीरथ सुन्दर। सकल भये ते नष्ट, जबे धारयोकर रघुबर॥ मद धनुष तृतिय परताप ये, भङ्गभये अरि

अङ्गसह। अवशिष्ट सुयश सो प्रथमही, सीय हरत भो नष्ट वह १
किञ्चित कोपकला, बिलास बहु बिभव बिभूषित। मञ्जुल मूरति
राम, भवद्भुज भ्राज अदूषित ॥ रावण इन्द्रजिदादि, हनन करि
कियो असुरबल। क्रन्दत फेरु शिवा, कफेरु कंक रटत बिटंत बि-
टपभल॥ फुट प्रकट गुग्गुलू धूपधुव, क्रीड़त कपिफणि निश्वसत।
आक्रोशत कोणप कुलबधू, भ्रमत द्वीपि रणभू हसत २ जासुधि
मिहिर मयूख, शिशिरसम सैन रेणु करि। बृत्रबैरि बाहिनी, बिलो-
कन कीन धीर धरि ॥ बासव जय जिन कियो, रावणादिक न
भयोरुज। तेपि भये भयभीत, रावरे निरखत युग भुज ॥ जिन
आश्रय पाय प्लवंग वर, सरितनाथ उत्तीर्ण तित। दोर्दण्डप्रचण्ड
खण्डनठयो, अरि उदण्ड परचण्ड जित ३ ॥ कविरुवाच। पद्धरीछन्द ॥
तदनन्तर रघुबर मुदित होय। आभरण यथोचित जोय जोय॥ सुग्रीव
सुग्रीवाभरण दीन। अङ्गद भुज अङ्गद चारु चीन॥ हनुमन्त हीय
दिय हीरहार। इमि यथायुक्त जिय धार धार॥ सत्कार कियो
सब कपिन केर। करि याद सकल हिय हेर हेर ४ बहु बिलसत
बर बानर अनीक। किष्किन्धा जावन दई सीक॥ सिय लषण
युक्त बिभु यथायोग। उपभोग करत सम्राज भोग ५॥ कविरुवाच।
मनोहरछन्द ॥ दाशरथी राम रबिबंशमें उदय भये, बनिता बिदेह-
सुता जासु योग जानी है। छद्मकरि बनते लेगयो लङ्क लङ्का-
धीश, करिकै कपीन्द्र सख्य पूर्ण प्रीति ठानी है॥ पर्वत के पुञ्जकरि
कीन्हो सिन्धु सेतुबन्ध, असुर सँहारि औधपुरी वाहि आनी है।
निज महारानी निकलङ्क पहिंचानी प्रभू, तदपि कलङ्ककी कहानी
ना सुहानी है ६ ॥ कविरुवाच।, बरवैछन्द ॥ बाल्मीकि मुनि आश्रमें
लषण निहार। सीय रखी श्रीरघुबर आयसु धार ७ तजि सिय

लक्ष्मण बिलपत बारम्बार । नैननिवहत निरन्तर अँसुवन धार ८ जो रण मधि न जिवावत मारुति मोय । लखते नहिं दारुण दुख लोय न दोय ९ कियो बैरबड़ हनुमत मोहिं जिवाय । हेरत हिय इहरत है हर हरहाय १० मृगपति गज्ज चकित चित मृगपशु जाति । प्रसव समय निज प्रमदा छिन न जहाति ११ अस नि-र्दय हिय रघुकुल भयो न होय । अरघुराम अस उर निज आवत मोय १२ रघुबर बिरह भयेहु जीवत सीय । नाहिं जनक जायेहु जानतजीय १३ जो न जियत उत रघुबर सीय बियोग । तबै बिधाता निर्दय निन्दायोग ॥ १४ ॥

इति श्री कविटीकारामाङ्कजगोविन्दरामाविरचितेश्रीरघुवरविलासेलक्ष्मण परितापवर्णनोनामषट्पञ्चाशत्तमोल्लासः ॥ ५६ ॥

कविरुवाच । रोलाछन्द ॥ भङ्ग कियो भवधनुष, समर किय जाम-दग्नि जय । गुरुगिर तजि बसुमती, सेतु कीन्हो पयोधि पय ॥ दश-कन्धर क्षयकार, रामको कोकहियो गुन । बर्णन करियो दैव, कियो उहिं कथा शेषचुन १ ॥ षट्पदछन्द ॥ श्रीरघुबर भुज प्रबल, बृहत ताण्डवसुन्दरबर । काण्डसौण्ड ब्रह्माण्ड, भाण्ड मण्डित प्रचण्डपर ॥ रण शिरनाटक महा, पाटवाम्बुधि पावन अति । आञ्जनेय प्रबिर-चित, सुनत नर ह्वै निर्मल मति ॥ वह सकल पापनिर्मुक्त ह्वै, पटुल पुण्य पद प्रापहै । प्राप्नोति अखिल अरिभट बिजय, श्रीरघुबर जिमि आपहै २ ॥ दोहाछन्द ॥ यह नाटक हनुमतरचित, निर्मल ब्रह्म नि-हार । अङ्क चतुर्दश कलित करि, भुवन चतुर्दश धार ३ ॥ षट्पदछन्द ॥ पवनपुत्र यह चरित, नखर करि लिखित शिलन पर । बाल्मीकि लखि कह्यो, रत्नसम रखहु सिन्धुवर ॥ आञ्जनेय तसकीन, यथा मुनि द्रुत आसु दिय । तदवतार नृप भोज, कियो उद्धृत हर्षित हिय ॥ अरु द्विज दामोदर मिश्र ग्राम, ग्रथित कियो क्रमकरि

समान जहान न आन लखावत २४ कोष कुबेर सुमेरु परैं करत-च्छिन बेर करैं न लुटावत। उच्चनते अति उच्च उदार गँभीरनते गहरो दरशावत॥ गावत है गुण गोविंद यों जिहि के चितको कित पार न पावत। रावत साहब दूलहसिंह समान जहान न आन लखावत २५॥ मनोहरछन्द॥ मञ्जुल मन्दील मनोरञ्जन समर्प्यो शीश, पुरट पटासो दिव्य दुपटा दिवायो है। गावत गोविन्द बिप्र पावत महान मोद, रावत धरेश धीय पार नाहिं पायो है॥ रोकरुपैचारसै बिचार से रखेहैं गोद, दूलह नरेन्द्र बित्त बारि बरसायो है। हीय हरसायो सर्बसुख सरसायो प्रेमपुञ्ज परसायो उर अछक छकायो है १ दिल दरियाव दिव्य दूल दुलहसिंह, राजनीति रीतिमध्य सुमति सनीरहौ। साम दाम भेद दण्ड चारहु उपायनते, स्यत तमाभहू गरीबरु गनीरहौ॥ गावत गोविन्द गिरा कीरति सुधाकरसी, देश देश दिपत दिगन्तलौं घनी रहौ। वाह वाह वाह गिरिनाद बादशाह तेरी, जौलौं शशि सूर तौलौं साहिबी बनी रहौ २॥ सोरठाछन्द॥ पुर पिपलोद अधीश, पन्द्रह बीघा प्रेमकरि। क्षिति कीन्ही बखशीश, अति मञ्जुल मालोत्तरू १ श्रीबर श्रीहरि हेत, पुण्यारथ पुहुमी प्रवर। द्विज गहि आशिष देत, मनबांछित है सर्वदा २ शतगुनीस पैंतीस सह, आश्विन सित दल स्वच्छ। सौरि वार दशमी दिवस, पूरणभयो प्रतच्छ ३॥ इति ग्रन्थ पारितोषिक वर्णनम्॥

इति श्रीपिपलोदपत्तनाधिपालरावतजीश्रीदूलहसिंहजीविज्ञापितरत्नपुरस्थ कविटीकारामाङ्गजगोविन्दरामविरचितेश्रीवरविलासेग्रन्थपरिपूर्ति वर्णनंनामसप्तपञ्चाशत्तमोल्लासः॥ ५७॥

श्लोकः। श्रीरस्तु मङ्गलं चास्तु प्रशस्तं शस्तमस्तु ते।
मनोभिलषितं चास्तु ह्यविच्छिन्नास्तु संततिः॥ १॥

इति श्रीहनुमन्नाटकोऽर्थात्श्रीवरविलासः सम्पूर्णतामगादितिशम्॥